PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA KURUD

VIDYALAYA PATRIKA

2025-26

PRABHAT

PM SHRI Kendriya Vidyalaya Kurud

Session 2025-26

MOTTO

" तत्त्वं पूषण अपावृणु "

meaning **O Lord, remove the covering (that the Seeker may see the Truth)**

VISION

"KVS believes in imparting knowledge/values and nurturing the talent, enthusiasm and creativity of its students for seeking excellence through high-quality educational endeavours."

MISSION AND KEY OBJECTIVES

01

TO CATER TO THE EDUCATIONAL NEEDS OF CHILDREN OF TRANSFERABLE CENTRAL GOVERNMENT EMPLOYEES INCLUDING DEFENCE AND PARA-MILITARY PERSONNEL BY PROVIDING A COMMON PROGRAMME OF EDUCATION;

02

TO PURSUE EXCELLENCE AND SET THE PACE IN THE FIELD OF SCHOOL EDUCATION;

03

TO INITIATE AND PROMOTE EXPERIMENTATION AND INNOVATIONS IN EDUCATION IN COLLABORATION WITH OTHER BODIES LIKE THE CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION (CBSE) AND THE NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING (NCERT) ETC.

04

TO DEVELOP THE SPIRIT OF NATIONAL INTEGRATION AND CREATE A SENSE OF "INDIANNESS" AMONG CHILDREN.

05

TO PROVIDE, ESTABLISH, ENDOW, MAINTAIN, CONTROL AND MANAGE SCHOOLS, HEREINAFTER CALLED THE 'KENDRIYA VIDYALAYA' FOR THE CHILDREN OF TRANSFERABLE EMPLOYEES OF THE GOVERNMENT OF INDIA, FLOATING POPULATION AND OTHERS INCLUDING THOSE LIVING IN REMOTE AND UNDEVELOPED LOCATIONS OF THE COUNTRY AND TO DO ALL ACTS AND THINGS NECESSARY FOR PROVIDING A CONDUCIVE ATMOSPHERE IN SCHOOLS.

GROWTH OF KVS

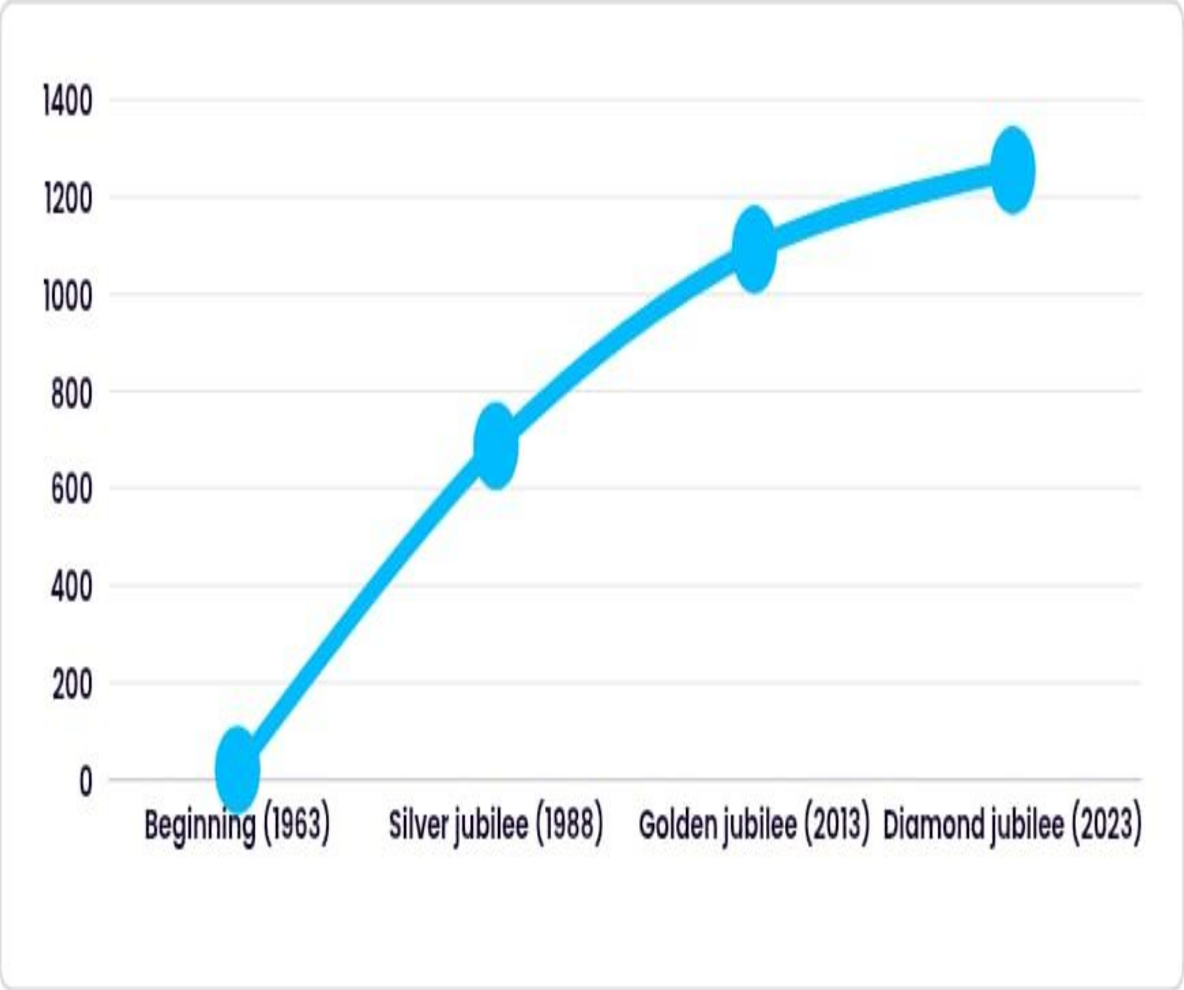

KVS has become one of the largest school chains of the world catering to more than 14 lakh students and houses around 44 thousand employees. Today, 1257 KV schools are there in India and 3 KV school abroad. Among all the KVs, 834 KVs are selected as PM SHRI schools.

ABOUT PM SHRI

"PM SHRI Schools" is a centrally sponsored scheme by the Government of India. This initiative is intended to develop more than 14500 PM SHRI Schools for Rising India in which every student feels welcomed and cared for, where a safe and stimulating learning environment exists, where a wide range of learning experiences are offered, and where good physical infrastructure and appropriate resources conducive to learning are available to all students.

More than 20 lakh students are expected to be the direct beneficiaries of the scheme.

PM SHRI

Pradhan Mantri Schools for Rising India

Creating holistic and well-rounded individuals equipped with key 21st Century skills

FROM THE PRINCIPAL'S DESK

Mrs. Gloria Minj
Principal

Discover the essence of perseverance and dedication at Kendriya Vidyalaya Kurud. Our theme, 'There is no shortcut to success, echoes our commitment to instilling values of hard work, resilience, and determination.

VIDYALAYA PATRIKA COMMITTEE

Mrs. Gyanmani Ekka
PGT (Hindi)

Mrs. Nalini shrivas
PGT (English)

Ms. Priya Prajapati
(PRT)

Mrs. Richa Tripathi
TGT(SANS.)

Mr. Taran Ganesh Thakur
TGT (AE)

Ms. Ritika Dhanwal
(PRT)

Mr. Sandeep Rathee
TGT(Librarian)

SCHOOL

HIGHLIGHTS

ANNUAL DAY HIGHLIGHTS

PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA
KURUD
District - Dhamtari (C.G.)

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कुरूद
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA KURUD
Vidya Vaibhav Olympiad
SPORTS OLYMPIAD
03.10.2024

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कुरूद
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA KURUD
COMMUNITY PARTICIPATION
15 February 2025

केन्द्रीय विद्यालय कुरूद
KENDRIYA VIDYALAYA KURUD
VILL-CHARRA, POST KURUD
COMMUNITY PARTICIPATION
15 February 2025

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कुरूद
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA KURUD
COMMUNITY PARTICIPATION
15 February 2025

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कुरूद
COMMUNITY PARTICIPATION
15 February 2025
Samsung Triple Camera

हिंदी

विद्यालय

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय कुरूद

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कुरूद का नाम,
शिक्षा का यह पावन धाम।
ज्ञान की गंगा बहती यहाँ,
हर विद्यार्थी के सपने सजते यहाँ॥

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कुरूद का नाम,
शिक्षा का यह पावन धाम।
ज्ञान की गंगा बहती यहाँ,
हर विद्यार्थी के सपने सजते यहाँ॥

कक्षाओं में जब होती पढ़ाई,
नए-नए विचारों की रचना आई।
गणित, विज्ञान, और इतिहास की धुन,
हर विषय में मिलता है हुनर का जुनून ॥

पुस्तकालय में ज्ञान का खजाना,
हर पुस्तक में छिपा है अनमोल तराना |
खेल के मैदान में मस्ती का रंग,
स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का संग॥

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की है शान,
प्रत्येक छात्र में छिपा है कलाकार महान।
नृत्य, संगीत, और नाटक की बारी,
हर विधा में हम देते हैं परीक्षा सारी॥

शिक्षा के संग संस्कारों का मेल,
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कुरूद का यही है खेल।
दृढ़ संकल्प और मेहनत की राह,
सफलता की सीढ़ी चढ़ते हैं यहाँ ॥

हमारा विद्यालय, हमारा अभिमान,
केंद्रीय विद्यालय कुरूद की पहचान।
ज्ञान, संस्कार, और अनुशासन का संगम,
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय कुरुद के बच्चे है हम ||

नाम - लेखा साहू
कक्षा - 10वीं

मेरा विद्यालय

मेरा केंद्रीय विद्यालय ,
तुम्हारा केंद्रीय विद्यालय
मानव का निर्माण करें ,
हमारा केंद्रीय विद्यालय
माता-पिता ने हमको जन्म दिया,
मेरे हित हरदम किया दिया।
हम मेहनत कर सुबह शाम ,
रोशन करेंगे उनका नाम।
पौरुष शरीर का मन भरें ,
हमारा केंद्रीय विद्यालय।

मेरा केंद्रीय विद्यालय ,
तुम्हारा केंद्रीय विद्यालय
मन वचन कर्म से एक सभी ,
अन्वेषण अनुरागी नेक सभी।
मां की करोड़ों से ओत-प्रोत ,
शिक्षक सारे हैं ज्योत स्त्रोत
बल कौशल ज्ञान प्रदान करें ,
हमारा केंद्रीय विद्यालय ।
मेरा केंद्रीय विद्यालय ,
तुम्हारा केंद्रीय विद्यालय
स्कूली शिक्षक के हैं हम आदर्श ,
हमें समाहित सारा भारतवर्ष।
हम राही है विश्व विजय के,अनुशासन जयअभय विनयके।
संगठन शक्तिमान करें , हमारा केंद्रीय विद्यालय।।

मेरा केंद्रीय विद्यालय ,
तुम्हारा केंद्रीय विद्यालय
हम सबके पोशाक है पूषण ,
हम गुरु शिष्य करें साथ नमन।
दोनों में बाल हो निश्चल हो ,
मां का हर कोना उज्जवल हो
परमात्मा प्रीति प्राण भरे ,
हमारा केंद्रीय विद्यालय।
मेरा केंद्रीय विद्यालय ,
तुम्हारा केंद्रीय विद्यालय
मानवता निर्माण करे ,
हमारा केंद्रीय विद्यालय।
मेरा केंद्रीय विद्यालय ,
तुम्हारा केंद्रीय विद्यालय।।

केंद्रीय विद्यालय संगठन

के **वि** एस की महिमा, लगती निराली हमें
बांधती है अपने, बंधन में सबको

इसकी पढ़ाई देती, सम्पूर्ण ज्ञान हमें
निखारती, सभी कलाएँ बच्चों में

कभी बाल मेला ,कभी हाइक पर बच्चे
कभी पोलियो कैंप, कभी स्काउट कैंप

कभी ट्रेनिंग कैंप, कभी करिएर गाईडेंस
बच्चों को ये, ट्रैकिंग पर ले जाते हैं

कभी वाटर स्पोर्ट्स, कभी ओलम्पीआड
सभी खेलों की ,स्पोर्ट्स मीट ये कराते हैं

शिक्षकों की योग्यता ,इनकी विधा से दिखे
बच्चों को ये, इंजीनयर, डाक्टर बनाते हैं
कभी रिफ्रेशेर, कभी ट्रेनिंग कैंप
शिक्षकों को शिक्षा के, गुर ये सिखाते हैं

नेता अभिनेता ,सभी प्रकार के चरित्र
विद्यालय में ये ,रोज ही दिखाते हैं

कराते हैं ये पार्लियामेंट ,स्कूल प्रांगण में
बच्चों में ये ,नेतृत्व की भावना जगाते हैं

पुस्तकालय भी इनके होते हैं, नंबर वन
जहां बच्चों को, ज्ञान का भण्डार मिल जाता है

प्रोजेक्ट हो, या हो असाइनमेंट
क्षण भर में ,यहाँ पूरे हो जाते हैं

ज्ञान का प्रसार ,करते ये **लब्रेरियन**
ज्ञान के मसीहा के, रूप में जाने जाते हैं

कम फीस, अच्छी सुविधा का वादा
राष्ट्रपति ,स्काउट गाइड ये बनाते हैं

ऊँची ऊँची बिल्डिंग ,खुला मैदान देखो
धरती पर स्वर्ग ,उतार ये लाये हैं

शिक्षा पर शोध, यहाँ का नारा है
सारा विश्व ,एक परिवार हमारा है

धार्मिक एकता ,अखंडता उपरोपरि
साम्प्रदायिक एकता, उद्देश्य हमारा है

बच्चे सहयोग करें, बाद पीड़ितों के लिए
भूकंप पीड़ितों के लिए, दंगा पीड़ितों के लिये

समाज की सेवा करना ,यहाँ बच्चों को सिखाते हैं
राष्ट्र समर्पण की ,भावना जगाते हैं

के **वि** एस की महिमा, लगती निराली हमें
बांधती है अपने, बंधन में सबको

नाम - भाविका ध्रुव
कक्षा -7वी

हमारा विद्यालय

यह हमारा विद्यालय है
शिक्षा का उत्तम आलय।

पढ़ते यहाँ हम सब बच्चे
नियमित रीति में है सब सच्चे
अंग्रेजी यहाँ सिखाई जाती है।

हिंदी यहाँ पढ़ाई जाती है
गणित यहाँ **समझाई** जाती है।

कला यहाँ सिखाई जाती है
शिक्षक सभी गुणी विद्वान।

विद्या का नित और भाईचारे की शिक्षा देते हैं
देशभक्ति का मार्ग पढ़ाते हैं।

हाँ शिक्षा का उत्तम आलय
यह हमारा विद्यालय है।।

नाम-दिशा चंद्राकर
कक्षा-12वी

शिक्षा

शिक्षा जीवन का आधार,
शिक्षा से ही मिलता आकार।

शिक्षा सम्मान दिलाती हैं,
शिक्षा अवगुण दूर कराती है।

शिक्षा कर्तव्य पालन सिखाती है
शिक्षा अधिकारों से अवगत कराती है

शिक्षा अनपढ़ को साक्षर बनाती है,
शिक्षा भविष्य का निर्माण करती है।

शिक्षा जैसा नहीं कोई और,
आओ चले विद्यालय की ओर।

जन जन शिक्षा को फैलाएं,
आओ एक साक्षर राष्ट्र बनाएं।

नाम- मोक्षिका साहू
कक्षा-7वी

शिक्षा हमारी पहचान

शिक्षा में ही प्रगति है,
हमारे देश की यह शक्ति है
शिक्षा से ऊपर न कोई स्थान
कभी न करना इसका अपमान

शिक्षा बनेगी हमारी पहचान
शिक्षा का है बहुत महत्व
इससे बनता हमारा व्यक्तित्व
शिक्षा को अपना लक्ष्य बनाओ

शिक्षा है बहुत जरूरी
ना रखना कभी इससे दूरी
शिक्षा से हमे मिलता है ज्ञान
इससे हमारा देश बनेगा महान

रेणुका पटेल द्वारा
कक्षा - 12वीं

स्कूल

देखो देखो स्कूल खुला है,
झगड़ा छोड़ो वक्त नहीं है,
पढ़ लिखकर ही लोग मिलेंगे
हमें बड़ाई करने को
झगड़ा छोड़ो वक्त नहीं है।
अभी लड़ाई करने को
अनपढ़ नहीं रहेंगे अब
ज्ञान बढ़ाना है,
यही समझकर हमको ,
सबको समझाना है,
सही समय है जीवन का ये,
अभी पढ़ाई करने को,
पढ़ लिखकर लोग मिलेंगे,
पढ़ाई करने को,
देखो देखो स्कूल खुला है।
झगड़ा छोड़ो वक्त नहीं है,
अभी लड़ाई करने को।

केन्द्रीय विद्यालय हमारा

केन्द्रीय विद्यालय हमारा, चमकता हुआ सितारा है
धूमकेतु सा आसमान में, विद्या की अमृत धारा है|

नन्हे मुन्ने बच्चों की, उम्मीदों का तारा है
खेल मे विज्ञान सीखना, अद्भुत बड़ा नजारा है

दृढ़प्रतिज्ञ और ज्ञानदायनी,शिक्षा बहती चारो ओर
पुस्तक बैठ के पढ़ने का, मजा बड़ा ही प्यारा है

शिक्षा मानवता की सृजनी, जीवन का उजियारा है
सूचना की स्रोत किताबें, ज्ञान का फव्वारा है

मानव मूल्य का मानबढ़ाएं, विद्या सब में अलख
एक है भारत श्रेष्ठभारत,यह संदेश हमारा है।

नाम-मानस धीवर
कक्षा- 2

मेरा स्कूल

मेरे स्कूल का नाम है K.V. स्कूल,
यहां खिले हैं सुंदर-सुंदरफूल।
मेरा स्कूल लगता है सजे-सजेसे,
हम पढ़ते हैं यहां मजे- मजेसे।
हम पढ़ते हैं अपने दोस्तों के संग,
ज्वायफुलमैथ्स, ऑर्थोलॉजी, सारंगी और मृदंग।
साथ ही सीखते हैं गीत, कविता और भाषण,
और सीखते हैं जीवन के अनुशासन।
शिक्षक हमें सच्चेलगन से पढ़ाते हैं,
मजे- मजे से ज्ञान की बातें सिखाते हैं।
कितना सुंदर न्यारा-न्यारा,
मेरा स्कूल है सब से प्यारा।

नाम - नामिका वर्मा
कक्षा - दूसरी

मेरा स्कूल

मेरा प्यारा सा स्कूल
मुझ को लगता कितना कूल
इसमें खिले हैं सुंदर फूल
तोड़नेकीनाकरनाभूल।

पढ़ने सीखने जाते हम
जितना सीखो उतना कम
जब स्कूल को छोड़ते हम
आंखें हो जाती है नम।

बचपन यहां गुजरता है मेरा स्कूल
मेरा प्यारा सा स्कूल
मुझ कोल गता कितना कूल
इसमें खिले हैं सुंदर फूल
तोड़ने की ना करना भूल।

पढ़ने सीखने जाते हम
जितना सीखो उतना कम
जब स्कूल को छोड़ते हम
आंखें हो जाती है नम।

बचपन यहां गुजरता है
तभी जीवन सुधरता है।
तभी जीवन सुधरता है।

अभ्यूदय साहू
कक्षा- छठवीं

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कुरुद
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA KURUD
Digital Library

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कुरुद
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA KURUD
Digital Library

Digital

Digital Library

PM SHRI
JUDGES
DEBATE

Olympiad
DEBATE

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कुरुद
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA KURUD
Vidya Vaibhav Olympiad
Debate
JUDGES

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कुरुद
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA KURUD

शिक्षा

हमारे प्यारे शिक्षक

ज्ञान के दीप जलाते हैं, शिक्षक रास्ता दिखाते हैं,
हमें अज्ञान से निकालकर,
सफलता की ओर ले जाते हैं।
कठिन सवालों के सरल जवाब देते हैं,
हमें सोचना सिखाते हैं,
हर चुनौती से लड़ना सिखाते हैं।
माता-पिता के समान, प्यार से समझाते हैं,
गलत रास्ते पर नही चलना है,
यह हमें प्यार से समझाते हैं।
संस्कारों का बोध कराते हैं,
देश का भविष्य उज्ज्वल बनाते है ।
शिक्षक का सम्मान हमेशा करना चाहिए,
उनका ज्ञान ही हमारा भविष्य बनाता है।

नाम – शताक्षी साहू
कक्षा– 10वी

पढ़ने का जोश

फूल से कोमल मुखड़े पर,
तनाव की लकीरें छाई हैं,|

नन्हे मुन्नो के बचपन पर,
पढ़ने का जोश हाई(high) हैं|

घर की छतो पर धम - धम की आवाज बिसराई हैं,
टीवी मोबाइल की दुनिया में गुम हुआ बचपन,|

पीठ से लदा बस्ते का वजन हुआ हाई (high) है,
खेलना कूदना छोड़कर पढ़ाई में दिमाग़ खपाई हैं,|

रिश्तो की समझ उनके जीवन से परे है,
संवेदन हीन दुनिया में बच्चे अकेले खड़े हैं,|

कहाँ गया कृष्ण जैसा भोलापन,
गेम की दुनिया में गुम हो गया बचपना |

दादा, दादी, नाना नानी की कहानी हो गई गुम,
आगे बढ़ने की अभिलाषा ने कर दिया उनको चुप|

परिवर्तन शील दुनिया ने बचपन पर तीर चलाई हैं,
नन्हें - मुन्ने के बचपन पर पढ़ने का जोश हाई हैं

रे पढ़ने का जोश हाई हैं |||

नाम - ख़ुशी साहू
कक्षा - 10वीं

विद्यार्थी प्रगति

विद्यार्थी जीवन, जीवन का एक अनमोल दौर,
यह दौर हमें ज्ञान का सागर सिखाता है।
इस दौर में हम अपने सपनों को बुनते हैं,
और अपने भविष्य की नींव रखते हैं।
विद्यार्थी जीवन, जीवन का एक सुनहरा दौर,
यह दौर हमें दोस्ती,
प्यार और भाईचारे का पाठ सिखाता है।
इस दौर में हम अपने जीवन के सबसे अच्छे दोस्त बनाते हैं,
और जीवन के सबसे खूबसूरत पल बिताते हैं।
विद्यार्थी जीवन, जीवन का एक चुनौतीपूर्ण दौर,
यह दौर हमें परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धा का सामना करना सिखाता है।
इस दौर में हम अपने साहस और दृढ़ संकल्प की परीक्षा देते हैं,
और जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार होतेहैं।
विद्यार्थी जीवन, जीवन का एक सारभूत दौर,
यह दौर हमें जीवन के मूल्यों और सिद्धांतों को सिखाता है।
इस दौर में हम सीखते हैं कि कैसे जीना है,
और कैसे एक अच्छा इंसान बनना है।

नाम - दिव्यांशी भतपहरी
कक्षा - 10वीं

गीतगीत

बोलो बच्चो एक , अब तुम खाओ केक।

बोलो बच्चो दो, हाथों को अब धो।

बोलो बच्चो तीन, ककणगुट्टेबिन।

बोलो बच्चो चार,जाएंगे बाजार।

बोलो बच्चो पांच,नहीं सांचकोआच।

बोलो बच्चो छह, भारतमाताकीजय।

बोलो बच्चो सात,सबबढ़ाओहाथ।

बोलो बच्चो आठ,जल्दीसीखोपाठ।

बोलो बच्चो नो, सदायशस्वीभव।

बोलो बच्चो दस,हो गई गिनती बस।

नाम - प्रतिभासोनकर

कक्षा-दूसरी

अ-अः

अनार है बड़े कामका

आम है मीठा बड़े कामका

इमली हो ती खट्टी-खट्टी

ईख लगती मीठी - मीठी

उल्लू को रात आई रास

ऊँट को लगी है बड़ी प्यास

ऋषि से ज्ञान पायो

सब को एकता का पाठ पढ़ाओ

ऐया को ऐरावत दिखाओ

ओखली मेंह मकुटे धान

औषधि से ठीक हुआ राम

अंडा खाकर से हत बनाओ

अ: है खाली फिरदोह राओ

नाम - तुशांक साहू

कक्षा – दूसरी

पाठशाला

चलो चले हम पाठशाला,
पहनेंगे हम ज्ञान की माला
पढ़ लिखकर विद्वान बनेंगे,
पढ़कर देश की सेवा करेंगे।

कोई डाक्टर,कोई इंजीनियर,
कोई भाई वैज्ञानिक बनेगा।
बहन बनेगी आई.एस, आई.पी.एस

बहन भी पीछे नहीं हटेगी,
चलो चले हम पाठशाला,
पहनेंगे हम ज्ञान की माला।

नाम – रजत सूर्यवंशी
कक्षा -2

मेरीपुस्तक

मेरी पुस्तक सुंदर है।
सुंदर चित्र दिखाती है।
सुंदर-सुंदर पाठ पढ़ा,
मेरा ज्ञान बढ़ाती है।

क ख ग घ हमें सिखाए।
अंको का ज्ञान कराए।
घर क्या है बाहर क्या है ?
यह भी हमें बताती है।

अच्छा और बुरा होना।
क्या पाना क्या है खोना।
बड़े प्यार से इन सबको,
पुस्तक हमें सिखाती है।

पुस्तक है ज्ञान खजाना।
इससे तुम लाभ उठाना।
भेद भाव के बिना सदा,
ज्ञान यहाँ फैलाती है।

नाम – अभ्युदय साहू,
कक्षा- छठवीं

सबसे प्यारी मेरी टीचर

सबसे प्यारी मेरी टीचर
हम को रोज पढ़ाती है
मेरी टीचर कितनी अच्छी
खेल-खेल में हमें सब सिखाती है
जब टीचर पाठ पढ़ाती है
बहुत सारी नई-नई अच्छी-अच्छी बातें बतलाती है
जब टीचर हमें डांटती है
अच्छा इंसान हम सब को बनाती है
कभी प्यार से कभी डाट के जीवन जीना हमें सिखातीहै
सदा बड़ों का आदर करना हमेशा से सिखाती है
सबसे प्यारी मेरी टीचर

नाम- अस्तित्व चंद्राकर
कक्षा- छठवीं

काम

काम करने का अपना मज़ा है
बस काम मेरे मन का हो
कर सकूं जिसे खुशी-खुशी
मैं तो अभी नन्ही बच्ची हूं
चलो गुड़िया को ब्रश कराकर
अभी मुझे नहलाना है
इसे हेल्दी खाना खिलाकर
मुझे भी तो स्कूल जाना है
होमवर्क तो कर लिया है मैंने
बस मैम से चेक करवाना है...
काम करने का अपना मज़ा है
बस काम मेरे मन का हो
देखो स्कूल की घंटी बजी है
प्रार्थना से शुरूआत होती है
रोज मेरे प्यारे दोस्तों संग
हंसी, ठिठोली और मुलाकात होती है
पर आज तुमको मैं अपनी
एक सिक्रेट बताती हूं
पर्यावरण है प्यारे प्यारे
हिंदी मानो माथे की बिंदी
अंग्रेजी के पोयम अच्छी है
सच कहूं तो ये गणित ही उलझाते हैं
इसीलिए तो हमारे प्यारे शिक्षक
इसे बार बार समझाते हैं...
काम करने का अपना मज़ा है
बस काम मेरे मन का हो
चिल्लाती है मां बहुत ही
पर काम की बात सिखाती है
पापा भी तो बहुत प्यारे हैं
जो गार्डन ले जाते हैं
दादा दादी दूर भले हों
पर उनके सुनाए कहानी को यादकर ही
नींद तुरंत आ जाती है...
काम करने का अपना मज़ा है
बस काम मेरे मन का हो

शिक्षक

मत पूछिए कि शिक्षक कौन है?
आपके प्रश्न का सटीक उत्तर आपका मौन है।

शिक्षक न पद है, न पेशा है, न व्यवसाय है।
ना ही गृहस्थी चलाने वाली कोई आय हैं।।

शिक्षक सभी धर्मों से ऊंचा धर्म है।
गीता में उपदेशित "मा फलेषु" वाला कर्म है।।

शिक्षक एक प्रवाह है,
मंज़िल नहीं राह है।
शिक्षक पवित्र है,
महक फैलाने वाला इत्र है।।

शिक्षक स्वयं जिज्ञासा है।
खुद कुआं है पर प्यासा है।।

वह डालता है चांद सितारों तक को तुम्हारी झोली में,
वह बोलता है बिल्कुल, तुम्हारी बोली में।।

वह कभी मित्र, कभी मां तो कभी पिता का हाथ है,
साथ ना रहते हुए भी ताउम्र का साथ है।।

शिक्षक एक विचार है,
दर्पण है, संस्कार है।।

शिक्षक भाषा का मर्म है,
अपने शिष्यों के लिए धर्म है।।

वह इंद्रधनुष है, जिसमें सभी रंग है।
कभी सागर है, कभी तरंग है।।

वह रोज़ छोटे - छोटे सपनों से मिलता है,
मानो उनके बहाने स्वयं खिलता है।।

नाम- तन्मय कुमार बघेल
कक्षा – तीसरीं

अध्यापक

जब पहला पग पड़ा विद्यालय में तब मैं कोरा पन्ना था,
मुझे भी शिक्षा ग्रहण करके एक अच्छा इन्सान बनना था,
हाँ साथ दिया मेरे शिक्षकों ने और सिखाई हर नई बात मुझे
अपनी लिखी कुछ पंक्तियों में मैं नमन करूंगा आज उन्हें !!
रोज सुबह मिलते है इनसे, क्या हमको करना है ये बतलाते है।
ले के तस्वीरें इन्सानों की, सही गलत का भेद हमें ये बतलाते हैं।
कभी डांट तो कभी प्यार से, कितना कुछ हमको ये समझाते हैं।
खो ना जाये भीड़ में कहीं हम, हम को हम से ही ये मिलवाते हैं।
हार हार के फिर लड़ना ही जीत है सच्ची, ऐसा एहसास ये हमको एहसास करवाते हैं।
कोशिश करते रहना हर पल, जीवन का अर्थ हमें ये बतलाते हैं।
देते है नेक मंज़िल भी हमें, राह भी बेहतर हमें ये दिखलाते हैं।
देते है ज्ञान जीवन का, काम यही सब है इनका, ये अध्यापक कहलाते हैं।

नाम- साकेत कुमार साहू
कक्षा – चौथी

किताब

बचपन की साथी किताब,
मौज मस्ती लाती किताब ॥
जीवन को संवारती किताब,
दुनिया भी घुमाती किताब ॥

रंगीन दुनिया की सैर कराती,
कभी जंगलों में भी ले जाती ॥
पशु पक्षी से हमें भी मिलाती,
गांव का भी अब हाल सुनाती ॥

दादी का राज बताती किताब,
मम्मी की बात सुनाती किताब ॥
बच्चों की जिद होती है किताब,
बचपन को भी दोहराती किताब ॥

नाम- केनिका साहू
कक्षा- चौथी ब

शिक्षा जगत

(१) शिक्षा जीवन का आधार हैं, इसके बिना सब बेकार हैं ।।

(२) शिक्षा जीवन का सार सिखाती हैं ,सभी परेशानियों से हमें बचाती हैं।।

(३) सभी समस्याओं का होगा हल ,शिक्षा से होगा एक बेहतर कल।।

(४) हम सभी का हैं एक ही नारा। शिक्षा हैं अधिकार हमारा।।

(५) शिक्षा हैं जीवन का आधार। जो करती सबके सपनों को साकार।।

(६) शिक्षा हैं हर बच्चे का अधिकार। इससे उन्हें दूर करने का न करो विचार।।

(७) शिक्षा हैं सबसे अनमोल। इसका नहीं हैं कोई मोल।।

नाम- सिध्दार्थ कौशल
कक्षा –चौथी

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कुरूद
वन महोत्सव
01.07.2024 से 07.07.2024

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कुरूद
वन महोत्सव

पर्यावरण

धरती माँ की पुकार

हरी-भरी धरती हमारी,
नीला आसमान प्यारा।
पेड़ों की छांव न्यारी,
नदियों का शीतल जल धारा।

पर प्रदूषण से त्रस्त प्रकृति,
सुनो इसकी पुकार।
आओ मिलकर करें प्रयास,
धरती को दें नव आकार।

पेड़ लगाओ, जल बचाओ,
स्वच्छ बनाओ हर राह।
प्रकृति से प्रेम निभाओ,
संभालो इस अनमोल धरा।

नाम - निखिल साहू
कक्षा - 10वी

धरती की पीड़ा

धरती कहे पुकार के, मुझको मत तू छेड़।
बढ़ता जाता ताप है , काट रहा क्यों पेड़।।

काट रहा क्यों पेड़, दरकती छाती जाए।
सूख रहे नलकूप , अग्नि सूरज बरसाए।।

'पूनम'रोपो बीज, हरित भू मन को हरती।
मतकर अत्याचार, सिसक कर कहती धरती।।

हरियाली को देख कर ,बादल छेड़े राग।
रिमझिम रिमझिम बूँदनी,धोये धरती दाग।।

धोए धरती दाग, पुनः मनभावन कर दे।
हर ले भू की पीर,ताल सरि जल से भर दे।।

'पूनम' झूमें पात, हर्ष से भर-भर ताली।
इसी हेतु हे तात ,करो चहुँदिश हरियाली

नाम - पल्लवी सिन्हा
कक्षा - 10वीं

बारिश

बारिश आई छम छम छम,
आओ भीगे तुम और हम।
छप छपा छप उछले हम,
फिर अचानक से फिसले हम।
मिलकर खाएँ सब गरम पकोड़े,
देखो बरसने लगे है ओले।
ठंडी ठंडी हवा के झोंके,
मेंढक देखो टक टक ताके।
बारिश की मस्ती में हम खूब मजे उड़ाए,
आओ मिलकर बारिश में हम सब नहाये।

नाम- तुषार कुमार साहू
कक्षा-10 वीं

धरा की पुकार

कह रही है धरा,
सुन लो बात मेरी ज़रा
क्या रंग था मेरी,
क्या रंग गयी मैं,
सब कुछ भूल गयी मैं,
मुझे याद करा दो ज़रा
कह रही है धरा,
सुन लो बात मेरी ज़रा
आँखों के ये काजल काले,
पुरे तन में दिखने वाले,
मेरा दामन रंग गयी है कैसे,
देखो न तुम मुझे ज़रा
कह रही है धरा,
सुन लो बात मेरी ज़रा
माँ का दर्जा देते हो मुझे,
प्यार से धरा कहते हो मुझे,
तो ला दो मेरा असली रंग,
और कर दो न मुझे हरा
कह रही है धरा,
सुन लो बात मेरी ज़रा

नाम -सोनम नेताम
कक्षा - 10 वीं

बसंत

हरी हरी खेतों में बरस रहे हैं बूंदे
खुशी खुशी से आया सावन
भर गया मेरा आँगन ।

ऐसा लग रहा है जैसे
मन की कलियाँ खिल गई वैसे
ऐसे की आया बसंत
लेके फूलो का जश्न ।

धूप से प्यासी मेरे तन को
बूंदों ने दी ऐसी अंगड़ाई
खुश हुआ मेरा तन मन
लगता है मैं हूँ एक दामन ।

यहाँ संसार कितना सुंदर है
लेकिन लोग नहीं उतने अकालमंद
यहीं है एक निवेदन
न करो प्रकृति का शोषण ।

नाम- शिवानी साहू द्वारा
कक्षा-12वीं

पेड़ बचाओ

पेड़ बचाओ, प्रदूषण मिटाओ।
पेड़ बचाएँ और वायु प्रदूषण कम करें।
पेड़ों को बचाएँ, ऑक्सीजन प्राप्त करें।
पेड़ों को बचाएं और प्रकृति को हरियाली से सजाएं ।

नाम-रत्नेश
कक्षा-7वी

पेड़

जहरीली हुई हमारी हवा ,
जीने को बेहाल सभी।
सुनते हैं पेड़लगाओ, पेड़लगाओ।
लगाता कोई नही,
जब होगा जान बचाओ ,जान बचाओ,
तब पेड़ लगाने पानी हो गा नही।।

नाम –क्षमा निर्मलकर
कक्षा – 5 वीं

वृक्ष धरा के हैं आधार

वृक्ष धरा के हैं आधार,
रोकें इन पर अत्याचार।
वृक्ष की जब होगी वृद्धि,
चारों ओर होगी समृद्धि
करो न पर्यावरण का निरादर,

वृक्ष धरा के हैं आधार,
रोकें इन पर अत्याचार।
वृक्ष की जब होगी वृद्धि,
चारों और होगी समृद्धि।

मिट्टी पानी और बयार,
ये है जीवन के आधार।
वृक्ष अगर हो हरे भरे,
तो हम क्यों आकाल से डरें।

वृक्ष काटना है बेईमानी,
सदा बरसाते भू पर पानी।
प्राचीन काल में थी धरती हरी भरी,
मनुष्य बना स्वार्थी,

भूल गया अपना कर्तव्य।
पर फिर वह समय आया,
मिलकर है लेना हमें संकल्प।
धरती मां को फिर बनाना है,
हरा भरा व खुशहाल।।

नाम -लीलिमा साहू
कक्षा - 10 वीं

छतरी

आसमान में चमकी बिजली,
छतरी लेकर प्रतिभा निकली।
काले-काले बादल आए,
चाहे जितना जल बरसाए।।
धूप, बारिश से हमें बचाए,
छतरी सबके मन को भाए।।

नाम- प्रतिभा सोनकर
कक्षा-दूसरी

पानी

पानी रे पानी कितना अमूल्य है तू
तुझ बिन ये धरती विरानी

जिसने प्यास की तड़प गुज़ारी
उसने तेरी कीमत जानी

जल बिन जीवन सोचूँ कैसे
पौधों का जीना भी पड़े है भारी

तुझे बचाना है कर्तव्य हमारा
तभी धरती पर रहेंगे प्राणी

नाम - षौम्य कुमार साहू
कक्षा - 10वी

वर्षा रानी

छमछम करती वर्षा रानी
लाई जीवन में खुशहाली।
धरती माता थी विरानी
उसमें लाई हरियाली
सब जीवों की प्यास बुझाती
धरती के आंगन को हंसाती।।

छमछम करती वर्षा रानी
लाई जीवन में खुशहाली।
मेंढक भी है फूदफूद करता
तालत लैया सरसरभरता
आसमान में इंद्र धनुष दिखता
बच्चों के मन में खुशियां लाता

छम छम करती वर्षा रानी
लाई है जीवन में खुशहाली।।

नाम-रुहांशी सिन्हा
कक्षा- 2 वीं

प्रकृति की पुकार

पेड़ टूटे, नदियां सूखी,
हरिता का अब नाम नही।

रूठ गया ओ बावरा बादल,
आया है पर काम नहीं ।

प्यासों की प्यास बुझाती नदियां,
खुद ही प्यासी बैठी है।

सागर से जा मिलने वाली,
ना जाने क्यों रूठी है।

जंगल का विनाश हो रहा,
भूमि बंजर फैली है।

गर्मी जैसी सर्दी अब तो,
फिजाएं कितनी बदली है।

वन्य प्राणी बेघर होकर,
बना हुआ आतंकी है।

प्रकृति से खिलवाड़ हुआ,
इतनी भी क्या तंगी है?

जंगल जंगल कोलाहाल,
गांव शहर अब मौन है।

ये जमाना आया कैसे,
जिम्मेदार कौन है।

धरा अकुलाई चीख रही है,
तुम मेरे धरोहर हो।

मेरा रक्षक बनना होगा
तुम ही मेरे कल हो।

तो आओ मिलकर कदम बढ़ाएं,
प्रकृति पूजक बनना है।

नदी, पर्वत, जंगल, धरती ,
सबका संरक्षण करना है।

नाम- श्रेयश साहू
कक्षा -10 वीं

प्यारी तितली

रंग बिरंगी प्यारी तितली
सबके मन को भाती है |
बैठ फूल पर जबर सलेती
सबका मन ललचाती है |

नाम-जयेश कुमार घृतलहरे
कक्षा – दूसरी

कौन

अगर न होता चांद रातमें,
हमको दिशा दिखाता कौन?
अगर न होता सूरज दिन को,
सोने सा चमकता कौन?
अगर न होती निर्मल नदियां,
जग की प्यास बुझाता कौन?
अगर न होते पर्वत,
मीठे झरने बहाता कौन?
अगर न होते पेड़ भला फिर,
हरियाली फैलाता कौन?
अगर न होते फूल बताओ,
खिल-खिलकरमुसकाता कौन?

नाम- मुदित्यपटेल
कक्षा–दूसरी

पेड़ हमारे साथी है

पेड़ हमारे साथी है,
छाया हम को देते है।
बाढ से हमें बचातेहैं,
मीठे फल भी देते हैं।
पेड़ कितने जरुरी है,
फिर भी बेचारे कटते है।
हम भी पेड़ लगाएँगे,
संसार को हराभरा बनाएँगे।

नाम- युवांशी सोनवानी
कक्षा-दूसरी

प्लास्टिक मुक्त अभियान

जीवन है अनमोल |
प्लास्टिक से नतोल ||
प्लास्टिक है जान लेवा |
जिन्दगी में नघोल |
जीवन है अनमोल ||
करले तू काम नेक |
प्लास्टिक कूड़ा दान में फेंक |
स्वच्छता के बोलि ये बोल |
जीवन है अनमोल ||
सागर में जाकर जब ये मिलते |
जलजीव भोजन समझ निगलते |
प्लास्टिक कचरा जब जमा होते |
बन तेटीले गोल |
जीवन है अनमोल ||
सृष्टिको नकर घायल |
नदे उनको घाव ||
प्लास्टिक का उपयोग कमकर |
कर उनका बचाव ||
जग को प्लास्टिक मुक्त बनाओ |
खुशियों के बजाओ ढोल |
जीवन है अनमोल
जीवन है अनमोल ||

नाम- पूर्वी वर्मा
कक्षा – दूसरी

प्यार मोर

मोर बड़ा ही प्यारा लगता।
नाच-नाच वन में इठलाता।।
कान्हा के मन को भाता।
मुकुट की यह शानबढाता।।
पंख मोर का होता गहना।
ईश्वर की यह अनुपम रचना।।
सबके मन को हैब हलाता।
राष्ट्रीय पक्षी मोर कहलाता।।

नाम- प्रतिभा सोनकर
कक्षा- दूसरी

तितली उड़ी

तितली उड़ी, उड़ न सकी
तितली उड़ी , उड़ न सकी
बस में चढ़ी , सीट न मिली
सीट न मिली तो रोने लगी
ड्राइवर ने बोला आजा मेरे पास
तितली बोली हट बदमास
हट बदमास मेरा घर है पास

तितली उड़ी, उड़ न सकी
तितली उड़ी , उड़ न सकी
ट्रेन में चढ़ी , सीट न मिली
सीट न मिली तो रोने लगी
बंदर ने बोला आजा मेरे पास
तितली बोली हट बदमास
हट बदमास मेरा घर है पास

नाम – आयान साहू
कक्षा - दूसरी

मैं मतवाला मस्त पवन-सा

मैंमतवाला मस्तपवनसा,
निर्मल जल सा छुजा ता हूँ.
कभी छांव सा प्यार देता,
कभी धूप सा खिल जाता हूँ.

नहीं किसी का गमढोता,
खुशियाँ हर दम फैलाता हूं.
हर पल जीवन जीने का,
फल सफा बतलाता हूं.
मैं मतवाला मस्त पवनसा..

बारिश की बूँदों सा चमकीला,
हर जगह हरियाली लाता हूँ.
सुंदर फूलों की बगीचा सा,
सुगंध मुस्कान सा बिखर जाता हूँ
मैं मतवाला मस्त पवन सा…

बातों-बातों में कुछ डांट
तो कुछ प्यार सबक देजाता हूँ.
परिवार का केंद्र बिंदुसा,
जोड़े रहने का संदेश दे जाता हूँ.
मैं मतवाला मस्त पवनसा.

निर्मल जल सा छु जाता हूँ,
कभी छांव सा प्यार देता,
कभी धूपसा खिल जाता हूँ..

नाम - अन्वय वंजारी
कक्षा - दूसरी

वर्षा आई

रिमझिम – रिमझिम वर्षा आई।
धरती माँ की प्यास बुझाई।।

चारों तरफ छाई हरियाली।
खेतों में भी फसल लहराई।।

मीठे स्वर में कोयल बोली।
नाच उठी मोरों की टोली।।

लो कागज की नाव बनाओ।
फिर पानी में नाव चलाओ।।

रिमझिम रिमझिम वर्षा आई।
धरती माँ की प्यास बुझाई।।

नाम – मधुसूदन सिन्हा
कक्षा–छटवीं

पेड़ हमारे साथी है

पेड़ हमारे साथी है ,
छाया हम को देते है।
बाढ़ से हमें बचाते है,
मीठे फल भी देते है।
फिर भी बेचारे कटते है,
हम भी पेड़ लगाएँगे,
संसार जग को हरा भरा बनाएंगे,
पेड़ हमारे साथी है।
जीवन मे हमारे है,
पेड़ रहे हम भीर हे।
पर्यावरण बढ़ाएंगे हम भी बच्चे पेड़ लगाए स्नेहा
कर जीवन को हराभरा बनाऐ।

नाम – धात्री यादव
कक्षा-छठवीं

पेड़ लगाओ-पेड़ लगाओ

धरती कहे पुकार के ,
अपना **सीना** फाड़ के।
पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ,
आने वाला कल बचाओ।

आग सी यह तपती धरती,
रग-रग-रग-रग करती धरती।
ठंडी की मौसम है फिर भी,
अंगारों सी जलती धरती।

कौन है इसके जिम्मेदार,
प्रश्न है मेरा बारंबार।
आगे बढ़ने के चक्कर मे,
पेड़ काटे हमने हज़ार।

पेड़ों के बिन धरती रानी,
लगती है यह बड़ी विरानी।
तरह – तरह के जीव – जंतु सब,
कहने लगे है पानी-पानी।

वर्षा की बूंदे भी अब तो,
जैसे सपने लगते है।
बादल कर ते घड़- घड़- घड़- घड़,
फिर भी नही बरसते है।

आने वाली पीढ़ी सोचो,
कैसे दिन बिताएगें।
क्या पीएँगे, क्या खाएगें,
हर दिन मरते जाएगें।

इसीलिए तो मै कहती हूं,
हम सब पेड़ लगाएगें।
धरती का हर कोना-कोना,
पेड़ों से सजाएगें।

धरती कहे पुकार के ,
अपना **सीना** फाड़ के।
पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ,
आने वाला कल बचाओ।

वीणा साहू
कक्षा–छटवीं

पेड़ हमारे साथी है

पेड़ हमारे साथी है ,
छाया हम को देते है।
बाढ़से हमें बचाते है,
मीठे फल भी देते है।
फिर भी बेचारे कटते है,
हमभी पेड़ लगाएँगे,
संसार जग को हराभरा बनाएंगे,
पेड़ हमारे साथी है।
जीवन मे हमारे है,
पेड़ रहे हम भीर हे।
पर्यावरण बढ़ाएंगे हम बच्चे भी पेड़ **लगाएंगे**
हाँ यह करके जीवन को हरा भरा बनाऐ।

नाम – धात्री यादव
कक्षा- छठवीं

पानी तो अनमोल है

पानी तो अनमोल है
उसको बचाके रखिए
बर्बाद मत की जिए इसे
जीने का सलीका सीखिए
पानी को तरसते हैं
धरती पे काफी लोग यहां
पानी हो तो दौलत है
पानी सा धन भला कहां
पानी की है मात्रा सीमित
तो पानी का पानी और सीमित
तो पानी को बचाइए
इसी में है समृद्धि निहित
शेविं गया घर की धुलाई
जब क्यों जरूर बचत करें
पानी से है धरती महान

नाम-भौमिक साहू
कक्षा–छठवीं

पानी और धूप

अभी अभी ही बरसने
लगा कहां से यह पानी।
किसने फोड़े घड़े बादल के
किसने की है ये शैतानी।।
सूरज ने क्यों बंदकर लिया
अपने घर का दरवाजा।
उसकी माँ ने भी क्या उसको
बुला लिया कह कर आज।।

जोर जोर से गरज रहे है
बादल है किस के काका।
किसको डाट रहे है किसने
कहना नहीं सुना मां का।।

नाम-शशांक टंडन
कक्षा- छठवीं

बारिश

बारिश का मौसम है आया,
अपने साथ कितनी खुशियां लाया।
चारो ओर हरियाली छाई,
गर्मी बीती वर्षा आई।।
किसानों के चेहरे खिल आए,
पौधो को पानी मिल गए।
पपिहा भी अब गाने लगा,
बारिश सब को भाने लगा।।
बारिश देख बच्चे मुस्काए,
पानी में वो नाव बहाए।
तपगई देखो धरती सारी,
सुमन भी लगने लगी प्यारी।।
मुझे भी भागई बारिश,
तो भीगने की , की मैंने साजिश।
छतरी ओढ़े नाचने लगी,
दादा , दादी डटने लगे।।
फिर भी में बाज़ नहीं आई,
बारिश में मैं खूब नहाई।।

नाम –आराध्या साहू
कक्षा- 6 वी

आओ हम सब वृक्ष लगाएं

आओ हम सब वृक्ष लगाएं,
चारों ओर हरियाली लाएं।
वृक्ष हमें जीवन देते हैं,
खुशहाली से भर देते हैं।
फल फूल और छाया देते हैं,
सारे कष्ट जीवन के हर लेते हैं।
वृक्ष ना कटे अब अभियान चलाएं,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाएं।
सारी दुनिया को यह समझाएं,
इस धरती को फिर से स्वर्ग बनाएं।
आओ हम सब वृक्ष लगाएं ....

नाम – निहाल साहू
कक्षा - छठवीं

🌴 पेड़ 🌴

प्रकृति का श्रृंगार करती है,
जीवन में **बहार** लाती हैं,
खुश हाली की बयार लाती है,
मनमें उमंग का संचार करती हैं,
बरखा से मेल कराती हैं।
जन जनका उत्साह बढ़ाती हैं,
चिड़ियों को जीवन देती हैं।
धरती की शोभा बढ़ाती,
मिट्टी की रक्षा करती है,
होंठों पे मुस्कान लाती हैं।
मेरा और पेड़ का है या **नारा**,
संकल्प ले हम सब को पेड़ हैं लगाना,
अब न चलेगा कोई बहाना।।

नाम – आयुष दीवान
कक्षा–छठवीं

💧पानी 💧

गर्मी के संग हो जाती है,
शुरू एक नई कहानी ।
प्यासे लोग तरसते हैं,
और मिलता नहीं है पानी।
आओ मिलकर हम सब,
सबको बाटे ज्ञान।
पानी की हर बूंद का,
हम सब करे सम्मान।
बढ़ेंगे कदम बढ़ाने से,
पानी बचेगा बचाने से।
पानी एक अनमोल रत्न है,
अपनी जीवनदायी।
इस अमृत को आप बचाओ,
नहीं गंवाओ भाई,
इसको नहीं गंवाओ भाई।

नाम - अदिति वर्मा
कक्षा -3 अ

🌴 पेड़ 🌴

एक पेड़
मात्र नहीं होता एक पेड़
उसकी जड़ों के नेह से बंधी रहती है पूरी धरती
शिखर आकाश से उंगली पकड़ खींच लाते हैं
बादलों को धरा तक
छांव पथिक को थाम लेती हैं कुछ पल
फल भूख को
सांस, सांस को
पत्ते बकरी,हिरण को
लकडी, झोपड़ी के साथ चूल्हे को
और शाखाओं
ने थाम रखा है
पक्षियों का हँसता, खेलता
आशियाने में बसा
सम्पूर्ण संसार...
नाम - गीतांश साहू
कक्षा -3 अ

आह! टमाटर

आह! टमाटर बड़े मजेदार
एक दिन इसको चूहे ने खाया,
बिल्ली को भी मार भगाया।
आह! टमाटर बड़े मजेदार,
एक दिन इसको चींटी ने खाया,
हाथी को भी मार भगाया।
आह! टमाटर बड़े मजेदार
एक दिन इसको पतलू ने खाया,
मोटू को भी मार भगाया।
आह! टमाटर बड़े मजेदार।।

नाम – गरिमाकंवर
कक्षा चौथी

बारिश आई☔

बारिश आई ,बारिश आई..,
पूरी दुनिया झूम रही है ।
नाचे मोर गाए कोयलिया ,
कू ..कू. कू ..कू.

बारिश आई ,बारिश आई ..,
नाचे मोर ,गाये कोयलिया ।
सावन का यह महीना है,
लगता बड़ा सुहाना है ।

जब हम बाहर खेलने जाए,
रंग बिरंगे छाता लाए..।
बहते बारिश के पानी में हम,
मस्ती से कागज के नाव चलाए।

हम सब बारिश में नाचे गाए,
भींगते भींगते घर को आए।
बारिश में भींगते...भींगते.,
मम्मी की डॉट भी मन को भाए।

बारिश का यह महीना है,
लगता बड़ा सुहाना है ।
जब जब बारिश आती है,
तब तब हरियाली छाती है ।

मेंढक टर्र टर्र करते हैं ,झींगुर गिटार बजाते हैं।
जब रिमझिम बारिश होते हैं, रंग-बिरंगे फूल खिलते हैं।
चारों ओर हरियाली छाती है,
मन में खुशियां लाती है।

खेतो में फसल लहलहाते है,
त्योहारों का मेला आता है। बारिश आई ,बारिश आई..
पूरी दुनिया झूम रही है...।

नाम- धर्मिष्ठा साहू

कक्षा- तीसरी

बादल राजा

बादल राजा बादल राजा पानी तो बरसाओ ।
देखो कितनी गर्मी है अब तो ना तरसाओ ।।

चैन नहीं है हमको कहीं ना स्कूल ना घर में ।
जुलाई का महीना है बरसो गांव- शहर में ।।
काली-काली घटा छाकर शांति तन को दिलाओ,बादल राजा

दोस्तों संग भीगते पानी में करते खूब मस्ती ।
पानी रोक कर बाँध बनाते बहाते कागज कश्ती ।।
मेंढक टर टर करते मोर को खूब नचाओ ,
बादल राजा

तुम बरसों तो पौधे लगाए और फूलों की क्यारी ।
हरी-भरी फसल उगेगी लगेगी खूब प्यारी ।।
बाबा तुमको रोज बुलाते उनको ना रुलाओ,
बादल राजा

नदी नाले ताल भरेंगे लगेगी मानो प्याली ।
पेड़ पौधे नाचे झूमे झूमे घास हरियाली ।।
हम जो रूठे फिर ना माने चाहे लाख मनाओ,
बादल राजा.

नाम - भेषजसाहू

कक्षा–तीसरी

पानी

पानी है कितना अनमोल,
जान लो तुम इसका मोल,
पानी बिना धरती है सूनी
बिन पानी जीवन का नहीं है मोल।
पानी से ये धरती बनी,
पानी से बने हम और तुम,
पानी से हरियाली यहां,
बिन पानी यहां सब गुम।
पानी नहीं रहे धरती पर,
सूखा पड़ जाए इस धरती पर,
ना रहे कोई जीवित यहां,
शमशान बन जाएगा इस धरती पर।

नाम- आराध्या भारतद्वाज

कक्षा- 4

बरखा रानी

बरखा रानी आओ तुम,

हमको गले लगाओ तुम |

गर्मी दूर भगाओ तुम,

तन को सुख पहुँचाओ तुम |

धरती की आस बुझाओ तुम,

तपते जंगल हर्षाओ तुम |

सागर में मिल जाओ तुम,

बरखा रानी आओ तुम ||

नाम- योनेश कुमार साहू

कक्षा- चौथी

पर्यावरण प्रदूषण

पर्यावरण प्रदुषण का अर्थ है वातावरण का दर्शित होना | प्रकृति में फैलने वाली **गंदगियाँ** ही प्रदूषण का कारण बनती है | पानी भूमि आदि जैसी कई चीजो से बना है | लेकिन जब इस पर्यावरण में कुछ ऐसे हानिकारक तत्व मिल जाते है जो हमारे पर्यावरण को प्रदूषित कर देते है | जिसकी वजह से जल, वायु, मिट्टी आदि सभी प्राकृतिक तत्व दूषित होने लगते है और इस स्थिति को पर्यावरण प्रदूषण कहा जाता है |

PM SHRI

महिला

शिक्षा

समाज

किसको नमन करूँ मैं भारत?

तुझको या तेरे नदीश, गिरि, वन को नमन करूँ, मैं ?
मेरे प्यारे देश ! देह या मन को नमन करूँ मैं ?
किसको नमन करूँ मैं भारत ? किसको नमन करूँ मैं ?
भू के मानचित्र पर अंकित त्रिभुज, यही क्या तू है ?
नर के नभश्चरण की दृढ़ कल्पना नहीं क्या तू है ?
भेदों का ज्ञाता, निगूढ़ताओं का चिर ज्ञानी है
मेरे प्यारे देश ! नहीं तू पत्थर है, पानी है
जड़ताओं में छिपे किसी चेतन को नमन करूँ मैं ?
भारत नहीं स्थान का वाचक, गुण विशेष नर का है
एक देश का नहीं, शील यह भूमंडल भर का है
जहाँ कहीं एकता अखंडित, जहाँ प्रेम का स्वर है
देश-देश में वहाँ खड़ा भारत जीवित भास्कर है
निखिल विश्व को जन्मभूमि-वंदन को नमन करूँ मैं !

नाम - भौमिक दीवान
कक्षा - 10वीं

वो पापा है मेरे

वो सागर हैं, हिम्मत के
वो गागर हैं, मेहनत के
खज़ाना हैं, कई खूबियों के
वो पता हैं, सारी खुशियों के
कोई और नहीं इस दुनिया में
वो पापा हैं मेरे, वो पापा हैं मेरे
गुण उन्हीं में देखा मैंने,
मुश्किलों में डटे रहना
हो कैसा भी समय चाहे,
लक्ष्यप्राप्ति को जुटे रहना
हो खुशी या गम का आलम,
अपनो के साथ खड़े रहना
जब साथ न दे दूजा कोई,
सच के लिए फिर भी अड़े रहना
आश्चर्य है!!!!
कैसे कर सकता कोई इतना???
बिना थके और बिना रुके
कोई और नहीं इस दुनिया में,
वो पापा हैं मेरे, वो पापा हैं मेरे

नाम - मोक्ष साहू
कक्षा - 10 वी

लड़की

लड़की हूं मैं लड़ सकती हूं ,
जग में नाम कमा सकती हूं ।
माता-पिता के पग चिन्ह पर चलकर ,
उनकी आशाओं को पूरा कर सकती हूं ।

पढ़ लिख कर जीवन में ,
कामयाबी की नयी उड़ान भर सकती हूं।
कठिनाइयों पर चलकर ,
जग में नाम कमा सकती हूं।

लड़की हूं मैं लड़ सकती हूं ,
जग में नाम कमा सकती हूं।
ससुराल के परंपराओं पर चलकर ,
बहू का फर्ज निभाऊंगी ।

दो कुल को जोड़कर ,
परिवार को खुशहाल बनाऊंगी ।
महापुरुषों के आदर्शों पर चलकर,
नया इतिहास गढ़ सकती हूं ।

लड़की हूं मैं लड़ सकती हूं,
जग में नाम कमा सकती हूं।
अन्याय के विरुद्ध लड़कर ,
ज्ञान का प्रकाश फैल सकती हूं ।

दुर्गा काली चंडी बनकर ,
अत्याचार्यों का नाश कर सकती हूं।
लड़की हूं मैं लड़ सकती हूं ,
जग में नाम कमा सकती हूं।।

देश की पहरी बनाकर ,
भारत मां की सेवा कर सकती हूं ।
दुर्गा रानी लक्ष्मी बाई बनकर,
देश की रक्षा कर सकती हूं।

नील छिड़के कोई मुकुट **मणि** पर ,
उसका सीना चीर सकती हूं ।
भारत मां की रक्षा कर ,
तिरंगे की शान बढ़ा सकती हूं ।

लड़की हूं मैं लड़ सकती हूं ,
जग में नाम कमा सकती हूं ।।

नाम - चेतना साहू
कक्षा - 10 वीं

बहन

ये जो बहनों का प्यार है,
खुशियों का संसार है।
दुनिया का सबसे अच्छा उपहार है,
लड़ना झगड़ना रूठना मनाना।
यही तो उनके रिश्तों का आधार है,
ये जो बहन का प्यार है।
रिश्तो की अलग पहचान है,
उनके आने से महक उठा
हमारे घर का आंगन और परिवार है।
पांव में बचती घुंघरू की झंकार है,
बगिया की चौकी चिड़ियों की चटकार है
यह जो बहन का प्यार है।
महंगी में रहो या सस्ती में
पर रहो भगवान की भक्ति में।

नाम-भोर देवांगन
कक्षा- 10वी

ग्राम्य जीवन

छोटे-छोटे भवन स्वच्छ अति दृष्टि मनोहर आते हैं,
रत्न - जड़ित प्रशादों से भी बढ़कर शोभा पाते हैं।
बट-पीपल की शीतल छाया फैली कैसी है चहुं ओर,
व्दिजगण सुंदर गान सुनाते,
नृत्य कहीं दिखलाते मोर।

शांतिपूर्ण लघु ग्राम बड़ा ही सुखमय होता है भाई,
देखो नगरों से भी बढ़कर उनकी शोभा अधिकाई।
कपट,द्वेष,छलहीन यहां के रहने वाले चतुर किसान,
दिवस बिताते हैं प्रफुलित चित
करते हैं अतिथि का मान।

आसपास में है फुलवारी कहीं-कहीं पर बाग अनूप,
केले,नारंगी के तरूगन दिखलाते हैं सुंदर रूप।
नूतन मीठे फल बागों से नित खाने को मिलते हैं,
देने को फूलेल-सा सौरभ पुष्प यहां नित खिलते हैं।

पास जलाशय के खेतों में ईख खड़ी लहराती है,
हरी-भरी यह फसल धान की कृषकों के मन भाती है।
खेतों में आते हैं यह हिरणों के बच्चे चुप-चाप,
यहां नहीं है छली शिकारी जो धरती सुख से पदचाप।

कभी-कभी कृषकों के बालक उन्हें पकड़ने जाते हैं,
दौड़-दौड़ के थक जाते वे कहां पकड़ में आते हैं।
बहता एक सुन निर्मल झरना कल- कल शब्द सुनाता है,
मानव कृषकों को उन्नति के लिए मार्ग बतलाता है।

क्यों करते हो??

भगवान ने अंतर नही किया,
तुम क्यों करते हो?
उसने तो केवल मनुष्य बनाया,
तुम आज भी लड़का-लड़की करते हो||
लड़की पैदा होने पर क्यों तिल तिल मरते हो,
बराबर मौका देने में इतना क्यों डरते हो||

तुमने एक को कैद रखा चार दिवारी में,
तो दूसरा खुश रहा दोस्ती-यारी में||
बराबर मौका मिलता तो बात कुछ और होती,
समाज सभ्य होता और देश विकसित होती||

लड़का हो या लड़की हर समस्या से लड़ सकते है,
यही सोच समाज में बदलाव कर सकते है||
दीजिये सबको बराबरी का अधिकार,
जीने दो, और करने दो सपने साकार||

भगवान ने अंतर नही किया,
तुम क्यों करते हो?
उसने तो केवल मनुष्य बनाया,
तुम आज भी लड़का-लड़की करते हो||

नाम - प्रखर देव साहू
कक्षा - 10वीं

मेरी माँ

मेरे सर्वस्व की पहचान
अपने आँचल की दे छाँव
ममता की वो लोरी गाती
मेरे सपनों को सहलाती
गाती रहती, मुस्कराती जो
वो है मेरी माँ।
प्यार समेटे सीने में जो
सागर सारा अश्कों में जो
हर आहट पर मुड़ आती जो
वो है मेरी माँ।
दुख मेरे को समेट जाती
सुख की खुशबू बिखेर जाती
ममता की रस बरसाती जो
वो है मेरी माँ।

नाम - मीमान्शु टंडन
कक्षा - 10 वी

दोस्त है हमारा

दोस्त हैं वो हमारे जो बिन बुलाए चले आयें
क्या बना आज खाने में हक़ जताकर खाएँ

दोस्त है वो हमारे, जो बिन कहे फर्जी में ही हँसाये
कितना भी दुःखी हो मन से आकर तब भी सताए

दोस्त हैं वो हमारे जो, बिन बोले छीन ले जायें
खुद हो गर जरूरत एक पैर पे दौड़े चले आएं

दोस्त हैं वो हमारे जो,माँ बाप की डांट से घबराएं
पता चले हमे किसने छुआ तो मार करने आ जायें

दोस्त हैं वो हमारे जो मौक़ा पाते खिल्ली उड़ाए
मायूस हुए जरा से भी गर,तो प्यार बहुत जताएं

नाम-आदित्य साहू
कक्षा- 10वीं

ज़िंदगी

ऐ ज़िंदगी कभी तो इश्क़ करले ,
कम ज़रा ये रश्क करले ।
शिकायतें हैं जो,
कभी तो बयां करदे ।
हारी हुई शामों में,
साथ एक पल का तो दे- दे
कभी तो गले से लगाले ।
ऐ ज़िंदगी कभी तो इश्क़ करले ,
कम ज़रा ये रश्क करले
उलझने मन की,
कभी तो सुन ले ।
कब तक अनजान रहेगी तू ,
कभी तो अपना पता बता दे ,
खिजा से कभी तो बहार लादे ,
ऐ ज़िंदगी कभी तो इश्क़ करले ,
ऐ ज़िंदगी कभी तो इश्क़ करले ।

नाम - मृणाल चंदकर
क्लास - 10वी

बेटी

बेटी हूं बेटी मैं तारा बनूंगी,
बेटी हूं बेटी मैं तारा बनूंगी,
तारा बनूंगी मैं सहारा बनूंगी.
तारा बनूंगी मैं सहारा बनूंगी,
पढ़ूंगी लिखूंगी और मेहनत भी करूंगी
पढ़ूंगी लिखूंगी और मेहनत भी करूंगी,
अपने पांव में चलकर दुनिया को देखूंगी,
अपनेपांव में चलकर दुनिया को देखेगी,
बेटी हूं बेटी मैं तारा बनूंगी ,
तारा बनूंगी मैं सहारा बनूंगी ,
बेटी हूं बेटी मैं तारा बनूंगी|
गगन में चमके चंदा धरती पर चमकूंगी
गगन में चमके चंदा धरती पर चमकूंगी,
छत्तीसगढ़में चमकूंगी उजियारा करूंगी ,
छत्तीसगढ़ में चमकूंगी उजियारा करूंगी ,
बेटी हूं बेटी मैं तारा बनूंगी,
तारा बनूंगी मैं सहारा बनूंगी,
बेटी हूं बेटी मैं तारा बनूंगी ,,,,,

नाम-सोनम दीवान
कक्षा - 10वीं

मेरे प्यारे पापा

थाम कर हाथ मेरा,
चलना आपने सिखाया है,
नखरे उठाऐ मेरे
कंधे पर बैठाकर अपने
भले बुरे का ज्ञान से
आपने अवगत करवाया है,
जब जब मुझ पर कठिनाई आई
आपने मेरी ढाल बनाकर खड़े रहे
आपके गोद में पापा
सच्चा सुख पाया है...
आज क्यों संकोच करते हो ,
मुझसे कुछ मांगने में आप
क्यों नहीं पकडते हाथ मेरा
जब लड़खाड़ते हो आप
आपके कुछ तो काम आ सकूं
यही मेरी अभिलाषा है।

नाम-प्रतिभा साहू
कक्षा-दसवीं

आजादी

पंछी है कैद अगर,
तो उड़ने में कर मदद तू।
रात है काली अगर,
दिया जला कर रौशन कर तू।
बीत गए कई साल रूढ़िवादी विचारों में उलझ कर,
सुलझा मन के भाव तू।
औरत, आदमी या हो कोई बच्चा,
सबके जीवन का कर सम्मान तू।
तोड़ दे दीवारें सारी,
आगे बढ़ विजई राह पर।
उन वीरों ने क्या पाया,
अगर तू अब भी डर में खोया।
उठ जा तू, छू ले आसमान,
आज़ाद पे है सबका हक ।

नाम-टी.सौम्य सागर
कक्षा-10वी

जात-पात का विनाश

आपको जिस दुश्मन से जूझना है , वह जाति प्रथा का पालन करने वाले लोग नहीं हैं, बल्कि वे शास्त्र हैं जो उन्हें जाति धर्म सिखाते हैं।"

"जाति व्यवस्था को तोड़ने का उद्देश्य अंतरजातीय भोज और अंतरजातीय विवाह को बढ़ावा देना नहीं था, बल्कि उन धार्मिक धारणाओं को नष्ट करना था जिन पर जाति आधारित थी।"

"चातुर्वर्ण्य से अधिक अपमानजनक सामाजिक संगठन की कोई व्यवस्था नहीं हो सकती। यह वह व्यवस्था है जो लोगों को सहायक गतिविधियों से वंचित, पंगु और अपंग बना देती है।"

"हिंदुओं की नैतिकता पर जाति का प्रभाव बहुत ही निंदनीय है। जाति ने सार्वजनिक भावना को मार दिया है। जाति ने सार्वजनिक दान की भावना को नष्ट कर दिया है। जाति ने जनमत को असंभव बना दिया है।"

नाम - यश्यश्री टंडन
कक्षा – दसवीं

बचपन

पांच और पांच जोड़ने से बनते है दस,

पांच पांच साथ रहे तो बनता पचपन।

ऐसे ही जीवन का स्वर्णिमपल है बचपन।।

खेल खिलौ ने दादा-दादी नाना-नानी।

याद रहती है सबकी बताई किस्से कहानी।

ऐसे ही बचपन की यादों से संवरती है हमारी जिंदगानी।।

भले ही उम्र हो जाए पचासपचपन।

बसती है तब भी सबके दिल में बचपन।।

इसीलिए खुलकर जियो अपना बचपन।

नाम-जियांश चंद्राकर

कक्षा- 2वी

मां

सुबह-सुबह उठ जाती मम्मा काम सभी कर जाती है,

रोटी दाल सब्जी बनाकर हमें उठाने लगजाती है।

हमें उठाकर ब्रशकराती नहाधुलाकर रोटी वो खिलाती,

लंच तैयार कर के मम्मा स्कूल बैग टाई लगा कर जूते वह पहनाती है।

जैसे वेन लगाती सिटी हम को गुड्डे कह जाती है,

मम्मी मेरी कितनी अच्छी सारा होमवर्क कराती है।

पढ़लिखकर स्कूल से हम घर को लौट जब आते हैं,

फिर मम्मा प्यार जताती दूध मलाई खिलाती है।

"आई लव यू मम्मा"

नाम- खुशमय दीवान

कक्षा- दूसरी

सब से प्यारी मेरी मां

सबसे प्यारी मेरी मां
हमें रोज पढाती है
मेरी मां कितनी अच्छी
खेल-खेल में हमें सब सिखाती है
जब मां पाठ पढ़ाती है
बहुत सारी नई-नई अच्छी-अच्छी बातें बतलाती है
जब मां हमें डांटती है
अच्छा इंसान हमे बनाती है
कभी प्यार से कभी डाट के जीवन जीना हमें
सिखाती है
सदा बड़ों का आदर करना हमेशा हमें सिखाती है
सबसे प्यारी मेरी मां

नाम- रौनक चंद्राकर

कक्षा- दूसरी

भारत

भारत देश हमारा है

हम को जान से प्यारा है

दुनिया में सबसे न्यारा है

सबका आँखों का तारा है

इसकी मिट्टी की खुशबू

लगती जहां से प्यारा है कहते

इसे हम मातृभूमि ये प्यारा

धरतीहमारीहैऔर

खूबसुबरतहरियालीहै

नाम- धानीवर्मा

कक्षा- छठवीं

नन्हें-मुन्हे बच्चे हम।

नन्हें-मुन्हे बच्चे हम
मिलकर पढ़ते-लिखते हम।

अ से सीखा अक्षर ज्ञान
ब से हम बनें बलवान।

गणित की कक्षा में हमको
जोड़ घटाना गुणा सिखाया।

विज्ञान के ज्ञान ने
हमको चमत्कार दिखाया।

सीख रहे अंग्रेजी अब
करने class में communication
देश को आगे लेके जाएंगे।

हम बच्चे केंद्रीय विद्यालय के।

नाम- अमोघ साहू
कक्षा- चौथी

चंद्रलोकमेंयान

खींच लिया है देश हमारा सारे जग का ध्यान

भेज दिया धरती से हमने चंद्रलोक में यान

रिश्ते में मामा लगते हैं दूर गगन के वासी

कम होता है जाना क्योंकि लगती है धनराशि

राहें भी आसान नहीं चक्कर बहुत है जाने में

जैसे तैसे पहुंच गये तो जोखिम फिर है आने में

मगर कभी मरा नहीं करता मानव का अरमान

भेज दिया धरती से हमने चंद्रलोक में यान

जन श्रुतियों में कहा गया कुछ नाना बनी कहानी

बुढ़िया तकली चला रही है कहती है यही नानी

अमृत की बुंदे बरसाता पूर्णमासी की रातें

अलग अलग देशों में होती तरह-तरह की बातें

अब सच्चाई बता दिया है दुनिया को विज्ञान

भेज दिया धरती से हमने चंद्रलोक में यान

बुद्धिबल से छान रहा है चांद का कोना-कोना

पर खलता है बूढ़ा चांद में जल जीवन ना होना

ऐसा नहीं कि इंसानो से अब तक रहा अछूता

लौट आए हैं टहल के पहले पहन के जर्सी जूता

सुंदर है सुंदर दिखता है सुंदरता का उपमान

भेज दिया धरती से हमने चंद्रलोक में यान

विश्वगुरु भारतभूमि को यूंही नहीं सब कहते हैं

प्रज्ञावान समर्पित साधक इस धरती में रहते हैं

जब विक्रम ने बड़े प्यार से चांद के गाल को चूमा

देश का बच्चा-बच्चा देखा खुशियों से सब झूमा

कद बढ़ा है भारत का ऊंची हो गई शान

भेज दिया धरती से हमने चंद्रलोक में यान।

नाम- श्रध्दा साहू

कक्षा- 6

मेरी प्यारी बहना

मेरी प्यारी बहना,
तु है मेरे जीवन का गहना।

मेरी प्यारी बहना,
सदा मेरे संग ही रहना।

तेरी मीठी आवाज से,
गूंजती है घर आंगन।

तेरी एक मुस्कान से,
झूम उठता है मन।

तु है तो सब है बहना,
बिना तेरे कुछ नही कहना।

मम्मी पापा की जान है बहना,
मेरी तू अभिमान है बहना।

मेरी प्यारी बहना,
तू है मेरे जीवन का गहना।

मेरी प्यारी बहना, मेरी प्यारी बहना।

नाम- मान्यता साहू

कक्षा- 5

कहानी

पेड़ बचाओ-जीवन बचाओ

♣♣♣♣♣♣♣♣

जीवन पेड़ से है, पेड़ जिसे हम आज अपने दैनिक जीवन- दिनचर्या में कोई अहमियत नहीं दे रहे हैं लेकिन हमें उस समय को याद करना है जिस समय सारी दुनिया में कोरोना का तांडव मचा हुआ था । हमारे ग्राम मेघा, जिला- धमतरी में भी इस कोरोना के तांडव में लोगों को जिंदगी बचाना बड़ा मुश्किल हो गया था, कई लोग जिंदगी से हाथ धो बैठे, कई परिवार, कई जिंदगियो का अंत हो गया, यह केवल मुख्य मांएने में कोरोना नामक वायरस के कारण हुआ है । लेकिन हम कह सकते हैं कि, ऑक्सीजन के कमी के कारण हुआ है जो की पेड़ की कमी के कारण हुआ है, क्योंकि उस समय ऑक्सीजन की भारी कमी हुई। आज मनुष्य,अपने निजी स्वार्थ के कारण पेड़ का अंधाधुंन कटाई किये जा रहे हैं और इस कटाई के कारण जिंदगी- जीवन विनाश की स्थिति में आ पहुंचा है। पेड़ से जीवन है क्योंकि पेड़ से ही हमें ऑक्सीजन मिलता है, हवा मिलता है, और हवा ही जिंदगी है, तो हम सब ज्यादा से ज्यादा पेड़ को उगाये,जागए, बढ़ाये।जब पेड़ बढ़ेगा, पेड़ संवरेगा, तो निश्चित ही हमें शुद्ध और पर्याप्त ऑक्सीजन मिलेगा और ऑक्सीजन(हवा) ही जिंदगी का आधार है, तो आज हम संकल्पित होकर अधिक से अधिक पेड़ लगाएंगे और इस अमूल्य और कीमती जीवन मनुष्य जो हमें मिला है उसे हम बचाएंगे। जय हिंद-जय भारत।

नाम- गीतश्री साहू

कक्षा- तीसरी

♣माता-पिता♣

मैं अपने माता-पिता दोनों से पूरे दिल से प्यार करता हूँ। वे दयालु लोग हैं जिन्होंने अपने बच्चों को भी वैसा ही बनना सिखाया है। इसके अलावा, जब उनके बीच बहस होती है, तो वे हमेशा सुलह कर लेते हैं, बिना इसका असर हम पर पड़ने दिए। मैं अपने माता-पिता की तरह बनना चाहता हूँ और उनके आशीर्वाद से जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहता हूँ।

नाम- गीतांश साहू

कक्षा- तीसरी

प्रेरणादायक कहानी

एक बार की बात है एक घर में आग लग गई। घर में से सभी लोगों को निकाला गया, मोहल्ले के कुछ लोग आग बुझाने में लग गए तो कुछ लोग सिर्फ देख रहे थे उसी घर में एक चिड़िया का घोंसला भी था।

चिड़िया अपनी चोंच में थोड़ा पानी लाती और आग के ऊपर डाल देती लेकिन आग बुझ ही नहीं रही थी लेकिन चिड़िया भी रुक नहीं रही थी वह बस अपनी चोंच में पानी भरकर लाती और आग में डाल देती चिड़िया को बार-बार मेहनत करते देख कौवा उसको देख कर हंसने लगा और बोला चिड़िया तू पागल है क्या?

तुझे क्या लगता है ,ये घर देख इतना बड़ा है और तेरी चोंच इतनी छोटी है तुझे क्या लगता है तेरे बुझाने से यह आग बुझ जाएगी, चिड़िया ने कहा हां मैं जानती हूं कि मेरे बुझाने से यह आग नहीं बुझेगी लेकिन जब भी इस आग के बारे में बात होगी तब मेरा नाम आग बुझाने वालों में होगा और तेरा नाम तमाशा देखने वालों में होगा।

सीख :-

हमारी जिंदगी में भी ऐसे बहुत सारे लोग होते हैं जिनको हमारी सफलता बुरी लगती है वह हमेशा हमारे अंदर कोई ना कोई कमी निकालते हैं और अगर हमसे कोई छोटी सी भी गलती हो जाए तो उसका तमाशा बना देते हैं इसलिए हमेशा ऐसे लोगों से दूर रहना ही बेहतर होता है।

नाम- लेव्यांश कुमार साहू
कक्षा -3

अच्छा पुत्र कौन

एक बार तीन स्त्रियाँ गाँव के पनघट पर पानी भरने गई। वे एकदूसरे से अपने पुत्रों के गणों का बखान करने लगीं। पहली बोली-'मेरा बेटा बहुत बड़ा ज्योतिषी है।

दूसरी ने कहा-"मेरा बेटा बहुत नामी पहलवान है।" तीसरी स्त्री को चुप देखकर

उन्होंने उसके पुत्र के विषय में पूछा। वह बोली-""बहन! वह कोई नामी व्यक्ति नहीं है, परंतु मेरी दुष्टि में मेरा प्रिय पुत्र है। ''

इसके बाद सभी स्त्रियाँ अपने घरों की तरफ लौट पड़ीं। मार्ग में पहली स्त्री का

पुत्र मिला और बोला- "बहुत अच्छा माँ! मैं जा रहा था, तुमने पानी से भरा घड़ा

दिखा दिया, यह शुभ शकुन है। अब दिन अच्छा बीतेगा।"

थोड़ी दूर पर दूसरी स्त्री का पुत्र मिला और बोला- "माँ! दिनभर कुश्ती करके

आ रहा हूँ, जोर की भूख लगी है । जल्दी से घर पहुँचकर खाना लगा दे । " तभी तीसरी स्त्री का पुत्र आया और बोला-"माँ मैं आ ही रहा था तो तू पानी भरने क्यों आ गई? ऐसा कहकर वह माँ से घड़ा लेकर चल दिया। शेष दोनों स्त्रियाँ खड़ी सोचती

रह गई कि सच्चा पुत्र कहलाने योग्य कौन है ?

नाम-लावण्या साहू

कक्षा- तीसरी

एकसौदा , ऐसा भी

गाँव का एक व्यापारी शहर से वापस आ रहा था । रास्ते में उसे एक अजनबी व्याक्ति मिला। दोनों आपस में बात चीत करने लगे। बातों के बीच अजनबी व्यक्ति ने व्यापारी को एक सौदै का प्रस्ताव दिया। व्यापारी को लगा कि इस सौदे में तो मुनाफा होना निश्चित है, अतःवह तुरंत सौदा करने को तैयार हो गया।

क्या आप जानना नहीं चाहेंगे कि सौदा क्या था?

सौदा इस प्रकार था # अजनबी ने व्यापारी से कहा कि मैं आपको तीस दिनों तक प्रति दिन एक हजार रु दूंगा, बदले में आप मुझे पहले दिन एक रुपया , दूसरे दिन दो रुपये , तीसरे दिन चार रुपये, चौथे दिन आठ रुपये, इस प्रकार प्रतिदिन पिछले दिन से दो गुने रूपये 30 दिनों तक देना होगा।

आपको क्या लगता है मुनाफा किसे होगा, अजनबी को ? हाँ , उत्तर देने में जल्दबाजी मत करना। अच्छी तरह से सोच-समझकर बताना।

नाम- कु.काव्या साहू

कक्षा-तीसरी (अ)

चतुर किसान

एक बार एक किसान के पास एक बकरी, घास का एक गट्ठर और एक शेर था। उसे एक छोटी नाव पर एक नदी पार करनी थी। जो एक बार में उनमें से केवल दो को ही ले जा सकता था। किसान मुश्किल में था कि अगर वह पहले शेर को ले जाए तो उसकी अनुपस्थिति में बकरी घास खा जाएगी। यदि वह घास ले ले तो शेर बकरी को खा जाएगा।

अंत में, उसने सही समाधान ढूंढ लिया। उसने पहले बकरी को ले गया और नदी के दूसरी तरफ छोड़ दिया। फिर उसने शेर को अपने दूसरे चक्कर में ले गया। वह शेर को छोड़कर बकरी को वापस ले आया। बकरी को इस ओर छोड़कर, वह घास की गट्ठर को साथ ले गया। वह शेर के पास घास छोड़ कर बकरी को लेने के लिए अंत में लौट आया। इस प्रकार वह बिना किसी नुकसान के नदी पार कर गया।

नैतिक शिक्षा : छोटी सी सूझबूझ भी आगे बहुत काम आती है।

नाम- कुलदीप साहू

कक्षा- 4

<u>सच्चा मित्र</u>

बहुत समय पहले एक पेड़ 🌳 पर तोतों 🦜 🦜 का एक जोड़ा रहता था ।उसी पेड़ के एक छेद में एक बूढ़ा सांप 🐍 भी रहता था। सांप इतना कमजोर था ,कि भोजन की तलाश में बाहर नहीं जा सकता था। इसलिए तोता उसके लिए कुछ खाना छेद के पास छोड़ देता था । सांप तोते का आभारी🙏🙏 था।

एक दिन एक गिद्ध तोते के ऊपर मंडरा रहा था। तभी एक शिकारी 🥷 वहां आया और उसने तोते में से एक पर अपना तीर चला दिया ।लेकिन सांप ने देखा कि उसके दोस्त खतरे में हैं और उन्हें बचाने के लिए शिकारी के पैर को काट लिया।

सांप के काटने से शिकारी का लक्ष्य बर्बाद हो गया और तीर 🏹 गिद्ध पर लग गया।

उनकी जान बचाकर सांप ने दिखाया कि वह एक सच्चा दोस्त था।

नाम- आशीष कुमार साहू

कक्षा – 4 ब

<u>ज्ञान की खोज में नन्हा राजकुमार</u>

एक दूर राज्य में एक छोटा राजकुमार रहता था। उसका नाम था विवेक। वह न सिर्फ अपने राज्य का युवराज था बल्कि वह ज्ञान के प्रति भी बहुत उत्सुक था।विवेक ने अपने राज्य की सारी किताबें पढ़ ली थीं और अब वह नए ज्ञान की खोज में निकल पड़ा। वह अपने घोड़े को लेकर पहुँचा एक घने जंगल में जहाँ एक बुद्धिमान साधु रहता था।जंगल में उसे तरह-तरह के जानवर मिले और उनसे नई-नई बातें सीखी। एक चालाक लोमड़ी ने उसे समझाया कि कैसे धैर्य और सावधानी महत्वपूर्ण होती हैं। एक शेर ने उसे बताया कि निडरता और शक्ति का असली मतलबक्या है।आखिर में वह पहुँचा साधु के पास जिसने विवेक को ज्ञान की असली कीमत सिखाई। साधु ने उसे बताया कि “ज्ञान अकेले पढ़ाई में नहीं, बल्कि अनुभवों में भी छुपा होता है।”विवेक जब राज्य वापस आया तो उसने अपने अनुभवों को अपने लोगों के साथ बाँटा और एक बुद्धिमान राजा बना।यह कहानी न सिर्फ बच्चों को ज्ञान के महत्व के बारे में सिखाती है बल्कि यह भी दर्शाती है कि जीवन में प्रत्येक अनुभव से कुछ न कुछ सीखा जा सकता है।

फूल

एक बार की बात है लोहर गांव में राजा था। उसका एक बेटा था और वह बहुत कंजूस था। उसकी एक बेटी भी थी वह बहुत खुश रहतीं थीं और वह बहुत सुंदर थी। एक बार जब राजा का बेटा फूल का बीज डाला तो नहीं उगा फूल और राजा के बेटी ने बीज डाला तो उग गया फूल राजा के बेटे फूल छुआ नहीं खिला फूल। राजा की बेटी ने फूल छुआ खिल गया फूल। राजा के बेटे ने फूल तोड़ा नहीं टूटा फल राजा की बेटी ने फूल तोड़ा टूट गया फूल। इस तरह हमें खुश रहना चाहिए और कभी भी दूखी नहीं रहना चाहिए।

नाम- आराध्या साहू द्वारा

कक्षा-आठवीं

अन्य

हर प्रश्न का हल पाएगा

ए मानव तू भीतर झांक
निजअंतस के अंदर झांक
आंधी जो मन मे चल रही
लहरे जो मन में उठ रही
तू द्वंद्व से है घिर चुका
है सामने संकट खड़ा
मन को न अब विश्राम है
बस अंत का आभास है
तो अंत की ही खोज में
तू प्राण को अपने लगा
जबतक न निकले हल कोई
तू राह में ही मन रमा
प्रश्नों का उत्तर ढूंढता
अवरोधको को फांदता
तू लक्ष्य इक दिन पाएगा
हर प्रश्न का हल पाएगा

नाम - मोक्ष साहू
कक्षा - 10 वी

आत्मविश्वास

दिन मे सूरज है अगर,
तो रात को भी चाँद तारे है।
पर जीत तो वे लोग भी सकते है,
जो कभी हारे है।

कभी धूप कभी बारिश,
ये तो कुदरत के नजारे है।
पर प्यासे तो वे लोग भी है,
जो समुद्र किनारे है।

कुछ न कर सकें तो कहते है,
हम तो किस्मत के सहारे है।
पर जान न सके तुम खुदको,
कि कितने रुप तुम्हारे है।

हिम्मत और हौसला हो अगर,
तो रास्ते कई सारे है।
पर जीत तो वे लोग भी सकते है,
जो कभी हारे है।

जो लोग वक्त के साथ ढल नही सकते,
वे लोग अपनी किस्मत बदल नही सकते।
गिर जाते है राह पर पत्थरों की तरह,
कोन कहता है कि वे लोग फिर चल नही सकते।

नाम- सोनाक्षी ध्रुव
कक्षा- दसवीं

वक्त

वक्त से लड़कर , जो नसीब बदल दे..
इंसान वही जो , अपनी तकदीर बदल दे..
कल क्या होगा , कभी मत सोचो..
क्या पता कल वक्त खुद अपनी तस्वीर बदल दे..

इंसान घर बदलता है , लिबास बदलता है..
रिश्ते बदलता है , दोस्त बदलता है..
फिर भी परेशान क्यों रहता है , क्योंकि वो खुद को नही बदलता..।
इसलिए वक्त के साथ चलिए।

नाम -आशुतोष ध्रुव
कक्षा -10वी

आओ फिर से दिया जलाएँ

भरी दुपहरी में अँधियारा
सूरज परछाईं से हारा
अंतरतम का नेह निचोड़ें, बुझी हुई बाती सुलगाएँ
आओ फिर से दिया जलाएँ

हम पड़ाव को समझे मंज़िल
लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल
वतर्मान के मोहजाल में आने वाला कल न भुलाएँ
आओ फिर से दिया जलाएँ

आहुति बाक़ी यज्ञ अधूरा
अपनों के विघ्नों ने घेरा
अंतिम जय का वज्र बनाने नव दधीचि हड्डियाँ गलाएँ
आओ फिर से दिया जलाएँ

नाम - युवराज सिंह ध्रुव
कक्षा - 10वी

एक छोटी सी भूल

एक छोटी सी भूल
बेवजह बड़ी बन जाती है
हंसते-खेलते रिश्तों में
यूं ही दूरियां आ जाती है

एक छोटी सी भूल
गलतफहमी पैदा करती है
बिना बात के ही कुछ बातें
अक्सर बड़ी हो जाया करती है

एक छोटी सी भूल
दरार का कारण बनती है
खोखली दीमक की तरह
रिश्तों के खत्म होने का कारण बनती है।

नाम - अंश सारंग
कक्षा- दसवीं

कल निकलेगा

कोशिश कर,हल निकलेगा,
आज नही तो कल निकलेगा ।

अर्जुन सा लक्ष्य रख , निशाना लगा ,
मरूस्थल से भी फिर, जल निकलेगा।

मेहनत कर, पौधो को पानी दे,
बंजर मे भी फिर फल निकलेगा।

ताकत जुटा हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी, बल निकलेगा ।

सीने में उम्मीदों को, जिंदा रख,
समन्दर से भी गंगाजल निकलेगा।

कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की ,
जो कुछ थमा-थमा है, चल निकलेगा ।

नाम-सत्यम
कक्षा- 7वी

समय का महत्व

समय कहता मैं तुम्हारे साथ हूँ,
समय की चाल निरन्तर चलती है।

यह पल में अनेक रूप बदलता,
दुख दर्द और सुख का साथी बनता।

रोज अपने नए रंग, रूप दिखाता,
सब इसकी मर्जी से चलता।

अपना हर पल का महत्व बताता,
ये कभी रुकता नहीँ थकता नहीँ।

बस निरतंर ही चलता जाता हूँ,
इसके महत्व को अगर समझोगे,
जीवन में अपने लक्ष्य हासिल करोगे।

सारे काम समय पर ही होते
चाहे हम कितने भी उत्त्सुक हो।

होगा काम समय पर ही,
इसलिए समय के महत्व को समझे,
समय कहता मैं तुम्हारे साथ हूँ।

नाम- गीतांजलि साहू
कक्षा- 7वी

हमारे सपने

सपनों की उड़ान भरो, आसमान को चूमें,
मेहनत से न डरकर, हर मुश्किल को झूमें।
नन्हें कदम बढ़ाओ, अपने लक्ष्य की ओर,
सच्चाई की राह पर, चलो सदा चहुँ ओर।
हिम्मत हो दिल में, और विश्वास प्रबल हो,
हर दिन नया संघर्ष, और विजय का पल हो।।
जीवन की पाठशाला में, सीखने को बहुत है,
हार मत मानो कभी, ये ही तो जीवन का सच है।
रंग-बिरंगी दुनिया में, अपने रंग भरो,
खुशियों का संगीत बजाओ, और धुन में खो जाओ।
तो आओ मिलकर, नए सपने संजोएं,
मेहनत से हासिल करें, जो भी मन चाहे वो पाए।
नाम -उत्कर्ष चुरेन्द्र
कक्षा- सातवीं

कोशिश

कोशिश कभी हारती नहीं,

जब निरंतर जारी है....

संघर्षों की राह पर,

जब मेहनत की धारा बहती है...

कोशिश कभी हारती नहीं........

असंभव हो थक कर चूर,

जब असीमित प्यार सम्भव है..

कोशिश कभी हारती नहीं.....

बार बार हो मन उदास

एक नई किरण आशा की जागती है..

कोशिश कभी हारती नहीं..

अटल विश्वास पथ पर

साथ संपूर्ण तैयारी भारी है...

कोशिश कभी हारती नहीं....

नाम-अरनव वंजारी
कक्षा–पांचवीं

जिंदगी बदल जायेगी

आज गरकांटे है

कल फूल खिल जायेगी

अंधेरों के बीच भी

उजियारा तुम्हें मिल जायेगी

ऐ मुसाफिर जरा सब्रकर

तेरी जिंदगी बदल जायेगी।

न बैठो पकड़ असफल दास्तां को

तुम्हें मंजिल भी मिलेगा

और यह शाम भी ढल जायेगी

ऐ मुसाफिर

तेरी जिंदगी बदल जायेगी।

फिर उजाला आयेगा

वह अंधियारा मिट जायेगा

जब सफल दीप जल जायेगी

ऐ मुसाफिर

तेरी जिंदगी बदल जायेगी।

नाम - परिधि ध्रुव

कक्षा- दूसरी

कोशिश

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है,

मन का विश्वास रगो में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना नहीं अखरता है,

आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

नाम – अर्णव
कक्षा – चौथी अ

कोशिश कर

कोशिश कर, हल निकलेगा।

आज नहीं तो, कल निकलेगा।

अर्जुन के तीर सा सध ,

मरुस्थल से भी जल निकलेगा।

मेहनत कर , पौधों को पानी दे ,

बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।

ताकत जुटा , हिम्मत को आग दे ,

फौलाद का भी फल निकलेगा।

जिन्दा रख , दिल में उम्मीदों को ,

गरल के समुन्दर से भी गंगाजल निकलेगा

कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की,

जो है आज थमा थमा सा, चल निकलेगा

नाम-मोक्ष कंवर
कक्षा - चौथी

मंजिल तुझको मिल जायेगी

खुद में रख तू आस्था,
बस, कर्म निरंतर किए जा।
त्याग से तू डर नहीं,
जीवन धर्म से जिए जा।।

समस्यायें रास्तों में आएगी,
सामना कर और निकाल दे।
चट्टान-सी भी मुश्किल हो,
तो ठोकरों से उछाल दे।।

रख फौलादी हिम्मत, तूफानों से टकराने की।
जरूरत नहीं है किसी भी मुसीबत से, घबराने की।।

फिर देख, तेरी किस्मत,
क्या-क्या रंग दिखायेगी।
सफलता कदम चूमेगी तेरे,
मंजिल तुझको मिल जायेगी।।

मंजिल तुझको मिल जायेगी।।

दीपक
माना मेरी रोशनी मंद है,

माना मेरे जीने की उम्र चंद है।

फिर भी नहीं हूं तन्हा यहां,

मैं नहीं मेरे जैसे दीपक अनंत है।

उम्र कम है फिर भी जलना सीखा है,

जीने की चाहत में मरना सीखा है।

आए तूफान कितने ही मेरे जीवन में,

इन्हीं तूफानों में निरंतर लड़ना सीखा है।

जब जब जरूरत होगी, खुद को जलाता रहूंगा,

खुशियों के पलों को यूं ही महकता रहूंगा।

~लीजा साहू द्वारा
कक्षा~आठवी

PM SHRI
पीएम श्री
केंद्रीय विद्यालय कुरूद
PM SHREE KENDRIYA VIDYALAYA KURUD
10 वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस
10th INTERNATIONAL YOGA DAY
21 जून 2024

संस्कृत

<u>एहि एहि वीर रे</u>

एहि एहि वीर रे
वीरतां विधेहि रे
पदं पदं निधेहि रे
भारतस्य रक्षणाय
जीवनं प्रदेहि रे।।
त्वं हि मार्गदर्शकः
त्वं हि देशरक्षकः
त्वं हि शत्रुनाशकः
कालनाग तक्षकः।।
साहसी सदा भवेः
वीरतां सदा भजेः
भारतीय-संस्कृतिं
मानसे सदा धरेः।।
पदं पदं मिलच्चलेत्
सोत्साहं मनो भवेत्
भारतस्य गौरवाय
सर्वदा जयो भवेत।।...

नाम- भरत कुमार
कक्षा - नवमी

<u>लघुकथा</u>

<u>शृगालस्य चतुरता</u>

एकदा एकः वायसः पिष्टकं चोरितवान्। पिष्टकं चोरयित्वा सः एकस्यां वृक्षशाखायाम् उपविशती स्म। वृक्षतले शृगालः एकः उपारतः आसीत्। वायसमुखे पृष्टकं दृष्ट्वा तं लालसा अभवत् तदा चतुरः सः शृगालः वायसं प्रति उद्देश्यं कृत्वा गायनासीत्अहो! ... अद्भुतसुंदरः विहगः एषः।कण्ठस्वरः अपि मधुरः भवेत्... न जाने कथं मधुरं नु गायति अयम्। वायसः स्वीय प्रशंसा श्रुत्वा गदगद नंदित पुलकितः अभवत्। अतः सः गीतं गायनाय यदा हि चंचु विस्फारितम अकरोत् पिष्टकम अधः पतितवान्। अतः किम् ! ..शृगालः पिष्टकं प्राप्य झटिति धावितवान्।

कक्षा -अष्टमी

नाम- नेहा साहू

साधूनां जीवनम्

गङ्गातीरे एकः साधुः आसीत्। सः बहु उपकारं करोति स्म। यः अपकारं करोति तस्यापि उपकारं करोति स्म। एकस्मिन् दिने सः गङ्गानद्यां सनानं कर्तुं नदीं गतवान्। नदीप्रवाहे एकः वृश्चिकः आगतः। साधुः वृश्चिकं दृष्टवान्। तं हस्तेन गृहीतवान्। तीरे स्थापयितुं प्रयत्नं कृतवान्। किन्तु सः साधोः हस्तम् अदशत्। साधुः तं त्यक्तवान्। वृश्चिकः जले अपतत्। पुनः साधुः वृश्चिकं गृहीत्वा तीरे स्थापयितुं प्रयत्नं कृतवान्। पुनः वृश्चिकः हस्तम् अदशत्। एवम् अनेकवारं साधुः वृश्चिकं गृहीतवान्। वृश्चिकअपि - अदशत्।नदीतीरे एकः पुरुषः आसीत्।सः उक्तवान्साधुमहाराज। अयं वृश्चिकः दुष्टः। सः पुनः पुनः दशति। भवान् किमर्थं तं हस्ते वृथा स्थापयति। वृश्चिकं त्यजतु।साधुः उक्तवान्वृश्चिकः क्षुद्रः जन्तुः। दंशनं तस्य स्वभावः। सः स्वस्य स्वभावं न त्यजति। अहं तु मनुष्यः। अहं मम परोपकास्वभावं कथं त्यजामि।यः अपकारिणाम् अपि उपकारं करोति सः एव साधुः भवति।

कक्षा - दशमी

नाम- मोक्षसाहू

कः किम् कर्त्तुम् न शक्तः

अन्धः किमपि न द्रष्टुम् शक्तः

पंगुः क्वापि न चलितुम् शक्तः।

मूकः किमपि न वक्तुम् शक्तः

बधिरः श्रोतुम् भवत्यशक्तः।।

मूढः बोद्धूम् न भवति शक्तः

न चापि भीरुः योद्धुम् शक्तः।

शयने रोगी भावत्यशक्तः

दीनः किमपि न दातुम् शक्तः।।

वृद्धः न भारं वोढुम् शक्तः

ईर्ष्युः कमपि न सोढुम् शक्तः।

नैव धावितुम् स्थूलः शक्तः

लोभी शान्त्या स्वपितुमशक्तः।।

अलसः मूर्खः निद्रायुक्तः

कार्यम् किमपि न कर्तुम शक्तः।

सदैव मिथ्याचरणे शक्तः

नैव स सत्यं द्रष्टुम् शक्तः।।

कक्षा – दशमी

नाम- - पूर्वांशी

किमपि कार्यं सहसा न कर्तव्यम्।

एकस्मिन् ग्रामे एक महिला वसति स्म। सा एकं नकुलं पालयति स्म। नकुलस्य विषये तस्याः बहुप्रीतिः आसीत्। महिलायाः एकः शिशुः अपि आसीत्। तस्याः गृहस्य समीपे जलं न आसीत्। जलम् आनेतुं सा दूरं गच्छति स्म।एकस्मिन् दिने जलम् आनेतुं सा अगच्छत्। गृहे कोऽपि न आसीत्। तस्याः शिशुः निद्रितः आसीत्। महिला बहिः गता। तदा एकः सर्पः गृहम् आगतः। नकुलः सर्पम् अपश्यत्। सर्पः शिशुसमीपम् अगच्छत्। नकुलः तत्क्षणे एव सर्पस्य उपरि अपतत्। क्षणमात्रेण एव सः सर्पम् अमारयत्। महिला जलं गृहीत्वा आगता। नकुलस्य मुखं रक्तमयम्। सा अचिन्तयत् अयं नकुलं मम शिशुम् अखादत्। अतः एव अस्य मुखं रक्तम्। सा तत्क्षणे एव एकं शिलाखण्डं नकुलस्य उपरि अक्षिपत्। नकुलः मृतः। अनन्तरं सा गृहस्य अन्तः गता। तत्र शिशुः क्रीडति। तत्रैव मृतं सर्पम् अपश्यत। सा बहु दुःखिता अभवत्। अविचारेण मया नकुलः संहृतः इति सा पश्चात्तापेन पीडिता अभवत्। अतः किमपि कार्यं सहसा न कर्तव्यम्। विचारं कृत्वा एव कर्तव्यम्।

कक्षा - दशमी

नाम- सिमरनयादव

उपाय:

एकः वृद्धः आसीत्। सः क्षुधितः अभवत्। समीपे एकः आम्रवृक्षः आसीत्। वृद्धः आम्रवृक्षस्य समीपम् अगच्छत्। वृक्षे बहूनि फलानिअपश्यत्। सः अचिन्तयत्अहं वृद्धः। मम शरीरे शक्तिः नास्ति। वृक्षः उन्नत अस्ति। कथम् उपरि गच्छामि। कथं फलं प्राप्नोमि। वृक्षस्य उपरि वानराः आसन्। वृद्धः एकम् उपायम् अकरोत्। सः पाषाणखण्डान् स्वीकृत्य अक्षिपत्। वानराः कुपिताः अभवन्। ते फलानि अक्षिपन्। वृद्धः तानि फलानि स्वीकृत्य सन्तोषेण अखादत्।

कक्षा - अष्टमी

नाम- चैतन्यकुमार

<u>ग्राम्य जीवनम्</u>

1- भारत वर्ष: ग्राम प्रधानः देशः अस्ति।

2- अधिकाः जना: ग्रामे एव निवसन्ति।

3- ग्राम्य जीवनम सुव्यवस्थितम भवति।

4- ग्रामाणाम जलवायुः स्वास्थ्यप्रद: भवति।

5- ग्रामे प्रायेण सर्वे स्वस्थाः भवंति ।

6 ग्रामे प्रायेण कृषीवला: भवंति।

7 ग्रामान परितः शस्यश्यामला धरित्री राजते ।

8 परिश्रमशीला: ग्रामीणा : धान्यादिकम उत्पादयंति।

9 ग्रामे शुक हंस मयूर कोकिलादय: पक्षिणः कूजन्ति।

10 ग्राम्य जीवनम सदाचार संपन्नम धार्मिकम च भवति।

11- ग्राम्य जीवनम सुकरम सुखकरम च भवति ।

कक्षा – नवमी

नाम- - रुद्रांश

<u>समाजं शक्तिशालीं</u>

प्रत्येकं मानवः यः शिक्षां प्राप्नोति सः शिक्षितः भूत्वा समाजं शक्तिशालीं करोति।

अर्थात

शिक्षा प्राप्त करने वाला हर मानव शिक्षित होकर समाज को शक्तिशाली बनाता है।

ज्ञानं शक्तिः। सूचना स्वतन्त्रता एव। प्रत्येकस्मिन् परिवारे समाजे च प्रगतेः आधारः शिक्षा एव भवति।

ज्ञान ही शक्ति है। जानकारी स्वतंत्रता है। प्रत्येक परिवार और समाज में शिक्षा प्रगति का आधार है। ,

कक्षा - दशमी

नाम- - खुशीसाहू

सुभाषित

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः

नवाम्बुभिर्भूमिविलंबिनो घनाः |

अनुद्धता सत्पुरुषाः समृद्धिभिः

स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ||-भर्तृहरि (नीति शतक)

भावार्थ जब् वृक्षों में फल लगते हैं तो वे फलों के भार -

से झुक जाते हैं और नये जल से परिपूर्ण बादल भी पृथ्वी ,

पर बरसने के लिये आकाश में नीचे उतर आते हैं इसी |

तरह सज्जन और महान व्यक्ति भी समृद्ध होने पर भी

नम्र और सहृदय बने रहते हैं क्यों कि परोपकार करने वालों

स्वभाव ही ऐसा होता है |

(इस सुभाषित द्वारा परोपकारी व्यक्तियों की तुलना फल

देने वाले वृक्षों और वृष्टि करने वाले बादलों से की गयी है

जो फलों और जल के भार से ये झुक जाते हैं वैसे ही सज्जन |

व्यक्ति भी धनवान होने पर भी विनम्र ही रहते हैं और सदैव

परोपकार में रत रहते हैं |

कक्षा - 7 वीं

नाम- मयंक घरडे

जय वृक्ष! जय वृक्ष

श्रूयताम्सर्वे वृक्षपुराणम्,
क्रियताम्तथा वृक्षारोपणम्।

वृक्षस्यास्ति सुन्दरम्याति मूलं बहुदूरम्।।

मूलेपी अन्नम्,तस्य काष्ठं कठिनम्,
काष्ठं कठिनं भवति इन्धनार्थम्।
पर्णेषु भवति हरित द्रव्यम्,
अतो हि अस्ति रे पर्ण हरितम्।।

पुष्पम्सुन्दरम्,अतीव मोहकम्,
पुष्पम्तस्य भवति रे देव पूजार्थम्।
फलम्प्रसमयं,तस्यफलं स्वादपूर्णम्,
फलम्हिअस्तिरेखगस्य अन्नम्।।

जलवातप्रकाशैःनिर्माति अन्नम्,
तेन हि अन्नेन वर्धते नित्यम्।
वृक्षस्य दृश्यताम्सर्वम्हिकार्यम्,
जीवनं तस्यास्ति परोपकारार्थम्।।

वृक्षे हि कुर्वन्ति विहगाःनी डम्,
केचित्तु कुर्वन्ति काष्ठे हि छिद्रम्।
आतपे तिष्ठति वर्षानुवर्षम्,
अन्येषां करोति छाया प्रदानम्।।

वृक्षो नैव अत्ति रे स्वकीयं फलम्,
सर्वम्हि अंगम्तस्य लोकहितार्थम्।
जनाःन स्मरन्ति तस्य उपकारम्,
बहुधा कुर्वन्ति वृक्षच्छेदनम्।।

मास्तु रे मास्तु ईदृशं पापं,
यथाशक्ति क्रियताम्वृक्षारोपणम्।
नैव रे नैवास्तु वृक्षकर्तनम्',
सर्वे हि कुर्वन्तु तद्संवर्धनम्।।...वर्धन्..

कक्षा - दशमी

नाम- लेखा साहू

संस्कृत ध्येय मन्त्र

पठामि संस्कृतं नित्यं वदामि संस्कृत सदा|

ध्यायामि संस्कृतं सम्यक्वन्दे संस्कृत मातरम||

संस्कृतस्य प्रसाराय नैजं सर्वं ददाम्यहम्|

संस्कृतस्य सदा भक्तो वन्दे संस्कृत मातरम्||

संस्कृतस्य कृते जीवन संस्कृतस्य कृते यजन्|

आत्मानम् आहुतं वन्दे संस्कृत मातरम्||1

कक्षा - 8 वीं

नाम- नव्यासाहू

<u>सुभाषित</u>

दैवमविद्वांस:प्रमाणयन्ति।
अर्थ–मूर्ख व्यक्ति भाग्य को ही सब कुछ समझता है।

प्रतिबदध्नाति हि श्रेय:पूज्यपूजा व्यतिक्रम:।
अर्थ–पूजनीय की पूजा करना कल्याण करता है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवताः।
अर्थ–जिस कुल में स्त्रियों का सम्मान किया जाता है,उस घर से देव गण प्रसन्न होते हैं।

आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते।हृदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति गम्यताम्।।
अर्थ–हाथी को खंभे से रोका जाता है। घोडे पर लगाम से काबू पाया जाता है और स्त्री हृदय से प्रेम करने से ही वश में हो जाती है।

दीर्घसूत्री विनश्यति।
अर्थ–प्रत्येक कार्य में अनावश्यक विलंब करने वाला कभी सफल नहीं होता है।

साहसे श्री प्रतिवसति।
अर्थ–साहस में लक्ष्मी निवास करती हैं।

पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेषु।
अर्थ–विवेकी लोगों की आस्थाभौतिक शरीरों से नहीं होती है,यह यश रूपी शरीर की रक्षा करने से है।

"*किम् अस्ति तत् पदम्* "

किम् अस्ति तत् पदम्

यः लभते इह सम्मानम्

किम् अस्ति तत् पदम्

यः करोति देशानाम् निर्माणम्]1[

किम् अस्ति तत् पदम्
यम् कुर्वन्ति सर्वे प्रणामम्

किम् अस्ति तत् पदम्

यस्य छायायाः प्राप्तम् ज्ञानम्]2[

किम् अस्ति तत् पदम्

यः रचयति चरित्र जनानाम् गुरू' अस्ति अस्य पदस्य नाम'

सर्वेषाम् गुरूणाम् मम शतं शतं प्रणामः ॥

नाम- मुक्ति साहू

कक्षा - 7वीं

इन्द्रस्य स्वप्नः

कस्मिंश्चित् ग्रामे इन्द्रः नामकः कश्चन निर्धनः बालकः आसीत्। सः सत्यवादी च उद्योगशीलः च आसीत्किन्तु तस्य भाग्यम् तं , सर्वदा परिवर्तयति स्म। सः अहोरात्रं परिश्रमं करोति स्म, तथापि तस्य भोजनाय पर्याप्तं नासीत्।

कस्मिंश्चित् रात्रौनिराशः इन्द्रः निद्रां गतः। स्वप्ने सः कञ्चित् वृद्धं पुरुषं दृष्टवान्, यः प् ,रसन्नमुखेन तस्य समीपं पश्यति स्म। वृद्धः पुरुषः अपृच्छत् ,"इन्द्र?त्वं किमर्थं एतावत् उद्विग्नः असि ,"

इन्द्रः तस्मै सर्वाः स्वस्य समस्याः आख्यातवान्। वृद्धः पुरुषः स्मितं कृत्वा उक्तवान् ,"इन्द्रसिद्धिः परिश्रमेण न, किन्तु , उत्साहेन भवति। त्वं स्वप्नानां प्राप्तये दृढः भव।"

इन्द्रः चकितः उत्थितः। सः स्वप्नं स्मृत्वा अगामि दिने नवीनया शक्त्या कर्म आरब्धवान्। सः कञ्चित् लघुवणिज्यं आरब्धवान् - हकानां सहायं करोति स्म तथा कदापि अपि न छलयति स्म।तथा सत्येन कर्म अकरोत्। सः सर्वदा ग्रा

शनैःशनैः, इन्द्रस्य सत्यं- च परिश्रमं च जनाः विश्रान्ताः। तस्य वणिज्यं समृद्धं जातम् तथा सः शनैःशनैः समृद्धिं प्राप्तवान्। - केषुचित् वत्सरेषु, सः ग्रामस्य सर्वाधिकः सफलः वणिक् अभवत्।

इन्द्रः कदापि न विस्मृतवान् यत् सिद्धये उत्साहः च सत्यं च अनिवार्यं भवतः। सः सर्वदा अन्येषां सहायं करोति स्म तथा ग्रामस्य जनानां कृते आदर्शः अभवत्।

नीतिः:

सत्यं च परिश्रमः च सिद्धेः कुन्जी अस्ति।

स्वप्नानां कदापि परित्यागं मा कुरु।

अन्येषां सहायं कृत्वा सिद्धिः च सुखं च लभ्यते।

नाम- मोक्ष साहू

कक्षा - दशमी

<u>*मम विद्यालयः*</u>

मम विद्यालयस्य नाम पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय कुरूद अस्ति। अत्र त्रिंशत)30शिक्षिकाः च पाठयन्ति। अत्र -शिक्षकः ( )पञ्चशतम्500विकसन्ति। मम विद्यालये एकः छात्राः पठन्ति। विद्यालये एकं सुन्दरं उद्यानं अस्ति। यत्र मनोहराणि पुष्पाणि (पुस्तकालयः अपि अस्ति। यत्र छात्राः पुस्तकानि पठन्ति। मम विद्य◌ालये एका विज्ञान प्रयोगशालाएका गणित प्रयोगशाला च , नाः अस्ति। विद्यालये एकः संगणककक्षः अपि अस्ति। शिक्षायाः क्षेत्रे मम विद्यालयः सम्पूर्णनगरे प्रसिद्धः अस्ति। मम विद्यालयी छात्राः अतिवोत्साहनपूर्णा तथा अभ्यासप्रियाः सन्ति। मम विद्यालयस्य सर्वे अध्यापकाः शिक्षायाम् अतीव निपुणाःयोग्याः च , सन्ति। क्रीडायाः शिक्षायाः च क्षेत्रे मम विद्यालयस्य प्रमुखं स्थानं अस्ति। मम विद्यालयः एकः आदर्शः विद्यालयः अस्ति। मम आत्मनं गर्वितः,भाग्यशाली च अनुभवामि यत् अहम् अस्मिन अत्युत्तमे विद्याल यः अस्ति। अहम्विद्यालयः मम प्रिये पठामि।

नाम- आस्था साहू

कक्षा - दशमी

"भारतीयसंस्कृतेः विषये रोचकतथ्यानि"

भारतस्य संस्कृतिः विश्वस्य प्राचीनतमा संस्कृति अस्ति५या लगभग ,,००० वर्षाणां प्राचीनता अस्ति। भारतस्य राष्ट्रीयभाषा हिंदी अस्ति। भारतस्य २२ अधिकृतभाषाः सन्ति तथा न केवल एतावता किन्तु ,भारतस्य विविधेषु राज्येषु प्रदेशेषु च प्रायः ४०० अन्याः भाषाः अपि भाष्यन्ते।

भारतीयसंस्कृतौ प्राचीनसभ्यताभ्यः आरभ्य अद्यतनसमयान्तं बहवः रोचकतथ्यानि सन्ति। भारतीयसंस्कृतौ विश्वस्य प्राचीनतमेषु नगरेषु एकं वाराणसी नामकं नगरे शंघाई सहयोगसंघटनेन)SCO२०वर्षे (२२कालाय पर्यटनसांस्कृतिकराजधानी इति नामिता २३-अभवत्। भारतदेशे स्थितं विश्वस्य सप्तसौंदर्येषु एकं ताजमहल इति भारतीयसंस्कृतिं प्रदर्शयति, यत् दृष्ट्वा देशविदेशेभ्यः जनाः आगच्छन्ति।

भारतीयसंस्कृत्या सह सम्बद्धं विश्वस्य दीर्घतमं महाकाव्यं महाभारतम्। यस्मिन किंवदन्त्याम् एकलक्षाधिकानि श्लोकानि सन्ति। भारतीयसंस्कृतौ प्रत्येकपार्श्वे विविधता अस्तिपि विषये। अस्माकं सः धार्मिकप्रथासु वा उत्सवेषु, पारम्परिककला वा अन्येषु कस्या , भारतीयसंस्कृतिं जीवितरूपेण धारयितुं महात्मागान्धिः, सरदारवल्लभभाईपटेलः, सुभाषचन्द्रबोसः इत्यादयः लोकप्रियनेतारः स्वातन्त्र्यपूर्वयुगे व्यापकान्दोलनेषु नेतारः अभवन्। अस्माकं संस्कृति अस्माकं आत्मीयता अस्तियतः सा अस्मभ्यं एकां विशेषां , नं यच्छति। भारतं धर्मनिरपेक्षदेशः अस्ति।पहचा

उपसंहारः

भारतीयसंस्कृतिः तस्याः परम्पराः च जनान् स्वपक्षे आकर्षयन्ति। भारतीयसंस्कृतिः सदैव शान्तिं सद्भावनां च प्रोत्साहयति। भारतीयमूले धर्मः हिन्दुधर्मःयोः आधारे स्थिताः। एतदतिरिक्तं एते बौद्धधर्मः, जैनधर्मः, सिक्खधर्मश्च। एते सर्वे धर्मः कर्मधर्म , चत्वारः भारतीयधर्माः इति कथ्यन्ते।

कक्षा - नवमी

नाम- धनश्री

महाकविकालिदास:

1 महाकविकालिदास: न केवलं भारतस्यप्रत्युतविश्वस्य श्रेष्ठः कवि: अस्ति।

2 तेषु द्वे महाकाव्येरघुवंशमकुमारसंभवम।

3 महाकविकालिदासस्य प्रतिभासर्वतोमुखीअस्ति।

4 महाकविकालिदासत्रीणि नाटकानि चमालविकाग्नि , विक्रमोर्वशीयम् , अभिज्ञानशाकुंतलम

5 तत्र कृत्रिमताक्लिष्टताचकिंचितमात्रमपिनास्ति।

6 महाकविकालिदासगीतिकाव्यमचमेघदूतऋतुसंहारम्।

7 अयम महाकवि: संस्कृतसाहित्येअद्वितीयंस्थानम्धरयति।

8 महाकविकालिदास: प्रतिभाशालि : कविअस्ति।

9 अयमसंस्कृतसाहित्ये लोकोत्तर: कवि: इति न कोऽपि संदेह: ।

कक्षा - नवमी

नाम- वेदांत

विद्यार्थी जीवनं

एतत् कथ्यते मनुष्यः यावज्जीवं विद्यार्थी अस्ति। सत्यं खलु इदं वचनम्। यदि मनुष्यः विद्याम् अर्जितुं तत्परः भवति तर्हि सः जीवने साफल्यं सुखं च प्राप्नोति। वस्तुतः प्रत्येकः मनुष्यः पञ्चविंशतिवर्षः पर्यन्तं विद्यार्जनं करोति । विद्यार्थीजीवनस्य प्रारंभ : शिशुविद्यालयात् भवति। ततः विद्यालयात्तत्पश्चात् च महाविद्यालयात् शिक्षा प्राप्नोति । ,

प्राचीन काले छात्रागच्छन्ति स्म। तत्रैव ब्रह्मचर्य पालयन् विद्याप्राप्त कुर्वन्ति स्म । अधुना शिक्षानीतिः परिवर्तिता । गुरुकुलं : अधुना कतिपयाः छात्राः प्राथमिकिं शिक्षां गृहित्वा उच्चशिक्षार्थं परदेशगमनं कुर्वन्ति। विश्वविद्यालयेषु पठन छात्रावासेषु वसन्ति। अधुना विद्यार्थिनां जीवनस्तर उच्चतरः अभवत्।

विद्यार्थीजीवनं मानवजीवनस्य मुख्य आधारः । विद्यार्थीजीवने यादृशी शिक्षां प्राप्यतेयान् संस्कारान् लभते, तेषाम् उपयोगः , समस्तजीवने भवति। अतः विद्यार्थिनः प्रथमं कर्तव्यं यत् विद्यापठने कदापि आलस्यं न कुर्युः । विद्यार्थी जीवनं सदा अनुशासनपूर्णं भवेत्। यदि छात्रः अनुशासितः भवतितदा तस्मे किमपि दुष्करं न भवति। ,

छात्रेण सदैव प्रातः सूर्योदयात् पूर्व उत्तिष्ठनीयम्। प्रात काले कृतं स्मरण चिरकालं:तिष्ठति । छात्रस्य पठने रुचिः स्वाभाविकी भवेत् । यदि प्रसन्नमनसा पठतिअङ्कान् आप्नोति । विद्यार्थीजीवने पठनेन् सह क्रीडनमपि आवश्यकम्। तर्हि परीक्षायां श्रेष्ठान् , शुद्धवातावरणे क्रीड़नेन शरीरं स्वस्यं भवति तथा मनः अपि पठने एकाग्रं भवति । यदि विद्यार्थी दिनचर्यानुसारं स्वकार्यं समये करोतिकाः सन्ति। आदर्शः छात्रः देशस्य आदर्श: नागरिकः तर्हि सः जीवने साफल्यं प्राप्नोति । विद्यार्थिनः देशस्य भावी नागरि , खलु ।

नाम दिव्यांशी भवपहरी -

कक्षा -10वीं

<u>पर्यावरणम</u>

सस्यमेकमप्रोपयेत मात्रे जनन्यै

सस्यमेकमप्रोपयेतपुत्रपौत्रेभ्य:

सस्यमेकमप्रोपयेतपक्षिशतेभ्य:

सस्यमेकमप्रोपयेतभाविदिनेभ्यः।।

"शैलेशैलेन माणिक्यम्मौतिकमन गजे गजे ।

साधवो न हि सर्वत्रचंदनम्न वने वने।।"

कक्षा - अष्टमी

नाम - तेजल

ENGLISH

NATURE

THE LITTLE PLANT

In the heart of a seed,
buried deep so deep,
a tiny plant lay fast asleep.
"Wake," said the sunshine,
"And creep to the light."

"Wake," said the voice of the raindrops bright.
The little plant heard and it rose to see,
what the wonderful,
outside world might be.
-Roop Narayan Sen (class 1B)

TREE

Do not cut me,
Cried the tree,
Because I give you
Rain for free
In my cool shade

You rest,
Eat my fruits
That are best.
Take in my fresh smell
Let me leave

My life well.

Gulshan kumar (class 1A)

Clouds

It is hot.
The sky is blue.
A little cloud comes looking for you.
More clouds come.
They bring rain.
Sing and dance.
It's cool again!

-Mitali (class 1B)

Twinkle Twinkle little star

Twinkle Twinkle little star,
How I wonder,
What you are,
Up above the world so high,
Like a diamond,
In the sky.

-Priyansh Sahu (class 1A)

SAVE TREES

Plants are vital to life on earth, serving as the foundation of the food chain, they convert sunlight into energy through photosynthesis, producing oxygen as a by-product, and they provide food, medicine and other important material for humans and other creatures.

-Atharva Chaturvedi (class 1B)

THE EARTH

Earth is the only planet known to support life, and its natural features are the subject of many fields of scientific research. Within the Solar System, it is third closest to the Sun; it is the largest terrestrial planet and the fifth largest overall. Its most prominent climatic features are its two large polar regions,

THE ATMOPHERE

The Earth's atmosphere is a key factor in sustaining the ecosystem. The thin layer of gases that envelops the Earth is held in place by gravity. Air is mostly nitrogen, oxygen, water vapor, with much smaller amounts of carbon dioxide, argon, etc.

WATER ON THE EARTH

Water is a chemical substance that is composed of hydrogen and oxygen (H_2O) and is vital for all known forms of life.[30] In typical usage, "water" refers only to its liquid form, but it also has a solid state, ice, and a gaseous state, water vapor, or steam. Water covers 71% of the Earth's surface.

A HAPPY CHILD

I have a house,

A red-red house a happy child am I,
I work and play
The whole day long
I hardly ever cry,
I have a tree, a green, green tree
To shade me from the sun,
And under it I often sit
When all my work is done

-Atharva Chaturvedi (class 1B)

BENEFITS OF YOGA AND MEDITATION

1 . Increase flexibility, balance and strength

2. Improve circulation and heart health

3. Lower stress level

4.Mental cliarity

5. Weight loss

6. Improved symptoms

7.Longer life

8. Increase level of positivity

9. Improved sleep quality

10.Improves coping with mental illness

THE TEACHERS

1) A teacher is a person who helps children and other persons to learn and progress in life.

2) A teacher takes the responsibility for shaping the lives and careers of his students.

3) They feel pride and honor to direct their students on the right path in life.

4) A good teacher never does any kind of partiality among his students.

5) Teachers always award their students for good things and punish them for evil things.

6) They spend their whole life in giving quality education to their students.

7) Teachers teach their students to differentiate between good and bad things in life.

8) A teacher understands the fact that not all students are equally capable and gives special attention to the weaker ones.

9) A good teacher makes the learning process easy and interesting for the students.

10) The good impression of a teacher makes them a role model for the students and helps them to become better individuals.